चन्दामामा
मार्च १९९१

RAMBO IV
No more evil, injustice and crime will be tolerated in this city. The relentless crusader is here. With his famed Zap Gun (the three sound gizmo that's the terror of the underworld) and his fleet of rough 'n tough ready-for-action vehicles — Wrecker, Super Dumper and Fire Engine. And of course, his missile-firing Helicopter. So...breathe easy. The one man army is here.
SAMMO
Mechanical and electronic toys
CHANDAMAMA TOYTRONIX
In collaboration with Sammo Corporation, S.Korea
Chandamama Toytronix Private Limited, Chandamama Buildings, 188, NSK Salai, Vadapalani, Madras 600 026

शीर्षक प्रतियोगिता का परिणाम
"चाचा भतीजा और काला टापू" में देखो।

प्राण
रमन की छतरी
दाबू और नरभक्षी पेड़
फौलादी सिंह और पृथ्वी के दुश्मन
चाचा भतीजा काला टापू
अंकुर और जादू का कुंआ
राजन इकबाल और बूटी का रहस्य
फैण्टम 9
मोटू पतलू 9

बड़े होने में बड़ा मज़ा
सुधा में है ज़ादू ऐसा!
सुधा सॉफ़्ट ड्रिंक कॉन्सेंट्रेट मज़ेदार बड़ा
फ्लेवर्स बड़े सारे—13 हैं पूरे!
एक पैक से बने गिलास बड़े सारे—
32 गिलास पूरे!
है न सुधा में मज़ा बड़ा!
SUDHA
SOFT DRINK CONCENTRATE
ORANGE
'बड़े' छोटों का बड़ा प्यार.
सुधा
विक्रेता : सारडा फूड्स एंड फ्लेवर्स नाशिक
सॉफ़्ट ड्रिंक कॉन्सेंट्रेट

तो लगी शर्त..., पैरीज़ स्वीट्स की खातिर
THE KING OF SWEETS
स्वीट्स ऐसी मज़ेदार, कोई कुछ भी करने को तैयार
HTA 7713 A

चलो ढूंढें टॉफियां

इस चित्र में पैरीज़ की 11 टॉफियां हैं. देखो तो तुम इन्हें ढूंढ पाते हो या नहीं?

ये टॉफियां है- कॉफी बाइट, कैरामिल्क, ट्राई-मी, लैक्टो-किंग, इक्लेयर्स, फ्रूट ड्रॉप, मैंगो, चॉकलेट एक्लेयर्स, कोकोनट क्रीम, चॉकोटॉफ और मिल्कीज़.

खेल चिकनी गोली का

एक कटोरे में एक कप आटा, 1/4 कप नमक और 1/3 कप पानी लेकर उसे लकड़ी के चम्मच से अच्छी तरह मिला लो. (देखें चित्र 1). अब गुंधे हुए आटे की लोई को उंगलियों से दबाकर देखो (देखें चित्र 2). लोई अगर गाढ़ी लगे तो और थोड़ा पानी मिला लो. और अगर बहुत ही पतली लगे तो थोड़ा आटा मिला लो.

अब आटे की बनी इस चिकनी गोली से तो तुम बिल्ली या अपने मनचाहे खिलौने बना सकते हो. इस चिकनी गोली की चीज़ को संजोकर रखने के लिए इसे एक प्लास्टिक की थैली में भरकर फ्रिज में रख दो (देखें चित्र 3). दुबारा इस्तेमाल करने के लिए इसे थोड़ी देर पहले फ्रिज से निकालकर रखना होगा ताकि इसका तापमान बाहर के तापमान का सा साधारण बन जाए.

Fig.1

Fig.2

Fig.3

खेलें खेल तराफे का

इसे बनाने के लिए चाहिए: रंगीन कार्डबोर्ड, कैंची, अखरोट के छिलके, शरबत पीने की स्ट्रॉ या पतली टहनी, सफेद कागज़, गोंद या फेविकोल और चिकनी गोली. करना बस यह है:

1. तराफा बनाने के लिए अखरोट के चारों छिलके रंगीन कार्डबोर्ड के आयताकृति टुकड़े पर चिपका दो (जैसा कि चित्र 1 में बताया गया है).

Fig.2

2. फिर सफेद कागज़ में से पाल काट लो.
3. पाल में एक स्ट्रॉ या पतली टहनी फंसा दो (देखो चित्र 2).
4. चिकनी गोली की ज़रा-सी लोई से यह पाल तराफे से चिपका दो (देखो चित्र 3).

Fig.3

अब इस तराफे को बाथ टब में या बहते पानी में छोड़ दो. देखो कैसा तैरता चला जा रहा है.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

प्रगति का रहस्य

दुनिया के हर देश के पीछे उसका इतिहास है । इतिहास के कुछ पहलू शानदार हैं, लेकिन कुछ पहलुओं पर अफसोस होता है । भारत के इतिहास के भी कुछ पहलुओं पर हम गर्व कर सकते हैं, लेकिन कुछ पहलू या परंपराएं ऐसी हैं जिन्हें बदलना आवश्यक है ।

इस समय हमारे देश में लोकतांत्रिक प्रणाली काम कर रही है । समूची दुनिया के पर्यवेक्षक इस बात पर सहमत हैं कि भारत को अपना लोकतंत्र बनाये रखने पर बधाई देनी चाहिए, क्योंकि उसके कई पड़ोसी देशों में यह आदर्श प्रणाली असफल रही है । हमें अपनी यह उपलब्धि बरकरार रखनी होगी ।

लोकतंत्र की खूबी यह है कि यह विभिन्नता को आदर और बढ़ावा देता है । पंजाबी-भाषी तमिल-भाषियों से भिन्न हैं । इसी प्रकार बंगला-भाषी बिहारियों से भिन्न हैं, पर उन सब के एक होने से ही भारत बनता है । किसी राज्य के भी लोग यह नहीं कह सकते कि जो अवसर दूसरे राज्यों को उपलब्ध हैं, वे उन्हें उपलब्ध नहीं हैं । कुछ समय के लिए लोग पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकते हैं; लेकिन वे पूर्वाग्रह देर तक नहीं टिक सकते । कोई भी राज्य यह दावा नहीं कर सकता कि वह दूसरे राज्यों से एकदम भिन्न है । यह सच भी नहीं है । दरअसल, कोई भी राज्य इस भिन्नता की दुहाई देते हुए आगे नहीं बढ़ सकता, और देश तो तभी आगे बढ़ सकता है जब वह एकता की भावना को बराबर बढ़ावा देता रहे ।

वर्ष : ४३ | मार्च १९९१ | अंक : ७

एक प्रति : ३ रुपये | वार्षिक चन्दा : ३६ रुपये
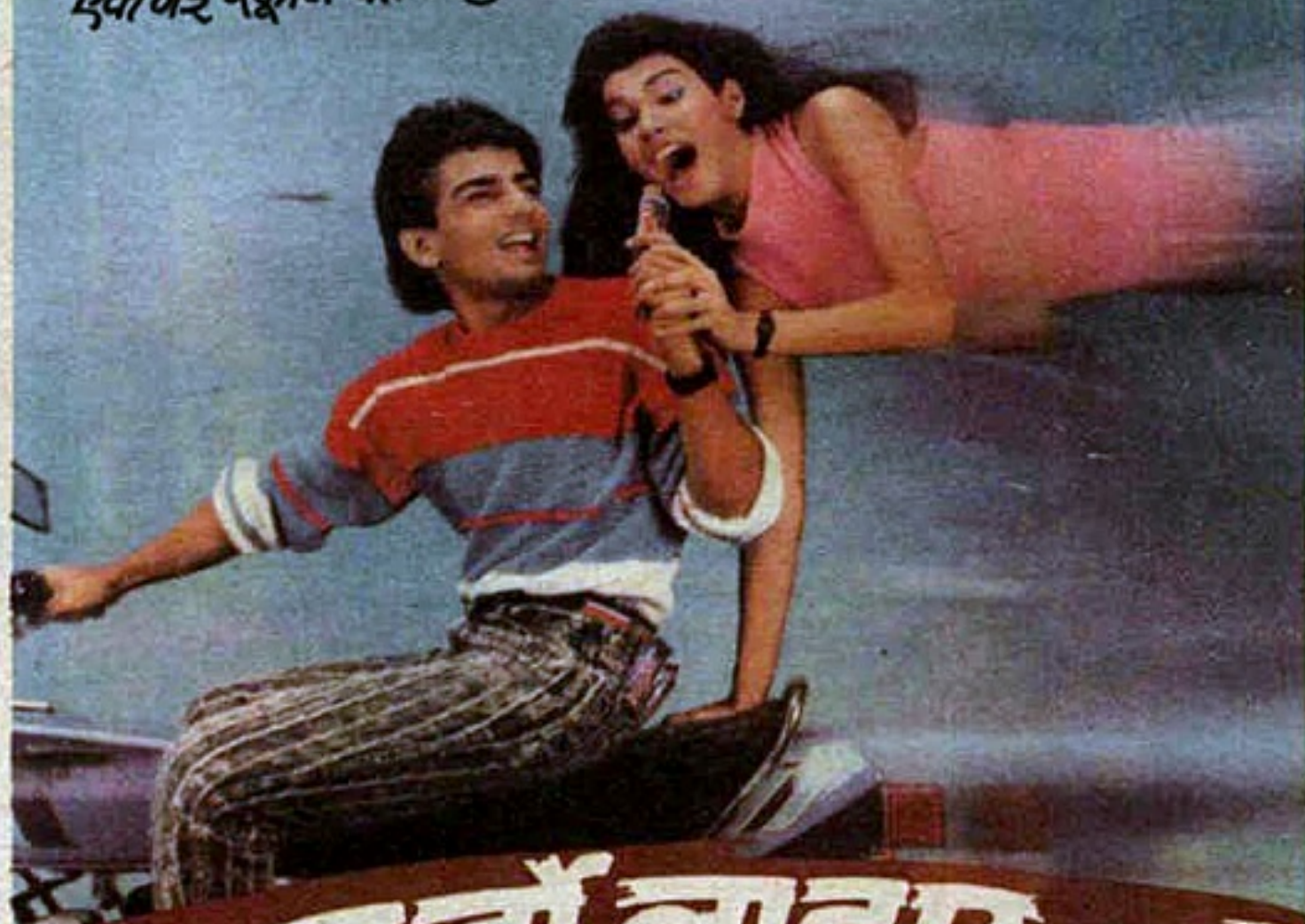
सुरिनाम में घटनाचक्र

रामसेवक शंकर जैसा नाम भारतीय लगना स्वाभाविक है । वह कुछ ही समय पहले तक सुरिनाम के राष्ट्रपति थे । सुरिनाम दक्षिणी अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट पर है । प्रश्न यह उठता है कि एक भारतीय उस देश का राष्ट्रपति कैसे बना?

वास्तविकता यह है कि सुरिनाम की जनसंख्या का एक-तिहाई भाग भारतीयों का है । काले लोगों और अर्द्ध-काले लोगों की संख्या भी उतनी ही है । बाकी एक-तिहाई अन्य लोगों की है । इन बाकी लोगों में इंडोनेशिया-मूल के लोग प्रमुख हैं । इसलिए इस देश में कई प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं- जैसे डच, हिंदी, सारानटैंगो और जावा की भाषा ।

सुरिनाम किसी समय नीदरलैंड्स का एक उपनिवेश था । १९७५ में यह स्वतंत्र हुआ ।

सुरिनाम की राजधानी का नाम पैरामारीबो है। इसका क्षेत्रफल १,६३,८२० वर्ग कि.मी. है । जनसंख्या लगभग चार लाख है । यहां पर धान की तगड़ी खेती होती है और खनिज पदार्थ भी भारी संख्या में पाये जाते हैं ।

भारत का संबंध संसार के इस भाग से प्रागैतिहासिक काल से चला आ रहा है ।

मेक्सिको सरकार द्वारा प्रकाशित मेक्सिको के इतिहास में कहा गया है – "वे लोग जो इस महाद्वीप में, जिसे बाद में अमेरिका कहा गया, पहले पहल आये, वे उन लोगों के समूह थे जिन्हें भारत से पूर्व की ओर चलने वाली ज़बरदस्त लहर ने धकेला था।"

सुरिनाम में भारतीय मूल के जो लोग अब रहते हैं, उन्हें यहां आये ज़्यादा अर्सा नहीं हुआ। उन्हें देश की सरकार में कई महत्वपूर्ण पद मिले हुए हैं। रामसेवक शंकर की तरह ही, जो कि इस देश के राष्ट्रपति थे, एक दूसरे भारतीय, जगरनाथ लक्ष्मण, यहां की राष्ट्रीय असेंबली के अध्यक्ष हैं।

सुरिनाम एक लोकतंत्र है। इसकी संसद में ५१ सदस्य हैं। किंतु सेना के हाथ में काफी सत्ता है। नववर्ष दिवस से कुछ ही दिन पहले राष्ट्रपति शंकर ने अपना त्यागपत्र दिया था। कुछ रिपोर्टों के अनुसार उन्होंने यह त्यागपत्र सेना के दबाव में आकर दिया। सेना-प्रमुख इस समय कर्नल बौटर्स हैं।

किंतु सेना का कहना है कि उसका राष्ट्रपति के त्यागपत्र देने में कोई हाथ नहीं है। बहरहाल, स्थिति अभी स्पष्ट नहीं हुई है।

मनपसंद कहानी

कभी बहुत पहले धर्मसेन नाम का एक राजा कहीं राज करता था। वह बहुत ही लोकप्रिय था। उसके तीन बेटे थे। बड़ा तो योग्य और समझदार था, पर दोनों छोटे बेटे ज़रूरत से ज़्यादा चुस्त और चालाक थे। शिक्षा पूरी होने के बाद जब वे युवावस्था में पहुंचे, तो तीनों के मन में राजा बनने की आकांक्षा जागृत हुई। दरबारियों को तो मौका ही चाहिए था। जब उन्होंने देखा कि तीनों भाई अपना-अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं, तो उन्होंने उन्हें वर्गलाना शुरू कर दिया।

राजा धर्मसेन से यह बात छिपी न रही। वह इसे लेकर परेशान हो उठा और उसने राजकाज, घर-परिवार छोड़कर कुछ दिन जंगल में बिताने का निश्चय किया। उसे विश्वास था कि उसकी अनुपस्थिति में रानी तीनों बेटों को सही रास्ते पर ले आयेगी।

जंगल में धर्मसेन की वासव नाम के एक व्यक्ति से भेंट हुई। वह अपने रिश्तेदारों से तंग आकर अपने परिवार के साथ जंगल में चला आया था और वहीं कुटिया डालकर रह रहा था। जंगल का परिवेश उसे भा गया था और वहीं सुख-चैन से रह रहा था।

धर्मसेन ने वासव की कहनी सुनी और ताज्जुब में पड़ गया। "इस तरह इस बीहड़ जंगल में आखिर कब तक रहोगे?" उसने प्रश्न किया, "क्या यह ज़िंदगी तुम्हें उबाऊ नहीं लगती?"

"हर व्यक्ति अपने परिवार के लिए ही तो जीता है। मेरा परिवरार मेरे साथ है। तब मुझे ऊब किस बात की?" वासव ने सरलता से उत्तर दिया।

"पर मानव तो सामाजिक प्राणी है!" धर्मसेन ने फिर कहा, "वह समाज से दूर रह कर कैसे जी सकता है? तुम्हारे बच्चे जब बड़े होंगे, वे समाज के रस्मो-रिवाज से बिलकुल अनभिज्ञ होंगे। आखिर रहना तो उन्हें समाज के बीच ही है न!"

"सामाजिक रस्मो-रिवाज, रीतियों-परंपराओं को लेकर मैंने कुछ कहानियां लिखी हैं और लिखे जा रहा हूं। मुझे उम्मीद है मेरी ये कहानियां पढ़कर मेरे बच्चे दुनिया के ढंग सीख जायेंगे। पंचतंत्र की कहानियों ने भी तो यही काम किया था। एक तरह से शिक्षा का यह श्रेष्ठ ढंग है। कहानियों के ज़रिये बतायी गयी बात आदमी के दिमाग़ में टिक जाती है। तब मेरे बच्चों को समाज में लौटते समय कोई परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी और यदि कोई बाधा आ भी गयी, तो वे वापस जंगल में आकर रह सकते हैं, क्योंकि इस जीवन के तो वे अभ्यस्त हैं ही।" वासव ने अपना तर्क देते हुए कहा।

इसके बाद धर्मसेन ने वासव से उसकी कहानियां सुनीं। वह उनसे बहुत प्रभावित हुआ और उसके सामने झुकता हुआ बोला, "महानुभाव, आप साधारण व्यक्ति नहीं हैं। आपकी कहानियां सचमुच अपना असर छोड़ती हैं। उन में साधारण जन के लिए अनेक संदेश भी हैं। आप की कहानियां तो मेरी समस्याओं का समाधन भी देती दिखती हैं। मैं चाहूंगा कि एक बार आप मेरे राज्य में पधारें और मेरा आतिथ्य स्वीकार करें।"

राजा की बात सुनकर वासव धीमे से हंस दिया और बोला, "राजन्, आप का मन अशांत है। इसीलिए आपको मेरी कहानियां पसंद आयीं और उनमें आपको अपनी समस्याओं का समाधान दिखा। वास्तव में वे ऐसी नहीं हैं। मैंने तो केवल अपने अनुभवों को आधार बनाकर उन्हें लिखा है। किसी धर्म-शास्त्र या नीति-शास्त्र का सहारा नहीं लिया। हां, यह ज़रूर चाहता हूं कि मेरी बात लोगों तक पहुंचे। इस में यदि आप की मदद मिल सके तो मैं अपने को सौभाग्यशाली समझूंगा। किंतु एक वर्ष का समय मुझे और दें। मैं कुछ और कहानियां लिखना चाहता हूं। जब मेरा काम पूरा हो जायेगा, तो मैं आपके यहां ज़रूर उपस्थित होऊंगा।"

इसके बाद धर्मसेन अपने राज्य को लौट गया। वासव की कहानियों से उसके हाथ जो सूत्र लगा था, उसके अनुसार उसने वंशानुक्रम राज्य-पद्धति समाप्त करके लोक-पद्धति शुरू कर दी। अब प्रजा में से भी कोई व्यक्ति भावी राजा हो सकता था।

शर्त केवल यह थी कि वह जनता का सेवक हो और चुनाव में खरा उतरे ।

एक साल के बाद वासव अपने दिये गये वचन के अनुसार राजा से मिलने शहर की ओर चल पड़ा । उसके साथ उसके बीवी-बच्चे भी थे । शहर में वह एक सराय में ठहरा । सराय में समीर नाम का एक युवक भी ठहरा हुआ था । समीर भी कहानियां लिखता था । लेकिन दोनों एक दूसरे को जानते नहीं थे ।

आपस में जब दोनों की जान-पहचान हुई तो समीर बहुत खुश हुआ और उसका अभिवादन करते हुए बोला, "महोदय, आपके दर्शन पाकर मैं अपने आप को कृतकृत्य समझता हूं । कहानियां मैं भी लिखता हूं, और मेरी कहानियां भी जीवन-अनुभवों पर आधारित हैं । अब तक मैं ने एक सौ एक कहानियां लिखी हैं । आप से मेरा अनुरोध है कि उनके बारे में अपनी सम्मति दें । मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा ।"

वासव ने सहमति में अपना सिर हिला दिया । तब समीर ने अपनी कहानियां पढ़ना शुरू कर दिया । वासव उसकी सभी कहानियां सुन गया, केवल एक ही कहानी सुनना बाकी था । सभी कहानियां सार-गर्भित थीं । वासव उनकी तारीफ करने से न रह सका, "बेटे, मैंने यह कला कंई वर्षों की मेहनत के बाद पायी, लेकिन तुम छोटी उम्र में ही उसमें पारंगत हो गये । तुम

जैसे व्यक्ति का तो राजा के यहां सम्मान होना चाहिए । इससे प्रजा की भी भलाई होगी । मैं राजा से जब मिलूंगा, तो ज़रूर इसके बारे में बात करूंगा ।"

"आप बात कीजिए," समीर ने खुश होते हुए कहा, "पर मेरी ऐसी कोई आकांक्षा नहीं है । मैंने जो कहानियां लिखी हैं, स्वांत:सुखाय लिखी हैं । मुझे इन्हें लिखकर तृप्ति हुई । आप इतने महान् लेखक हैं । आप ने भी इन्हें सराहा, यह मेरे लिए गौरव की बात है । यही मेरा सम्मान है । मुझे इससे ज़्यादा और कुछ नहीं चाहिए । अब मेरी एक ही कहानी सुनाने को बची है । यह मेरी प्रिय कहानी है । आप कृपया इस पर अपने विचार दें । यही मेरी प्रार्थना है ।"

वासव से सहमति पाकर समीर अपनी प्रिय कहानी पढ़ने लगा । पढ़ चुका तो वासव बोला, "बेटा, यह कहानी तो मेरी समझ में नहीं आयी । तुम ही बताओ तुम ने इसके ज़रिये क्या कहना चाहा है?"

वासव की बात सुनकर समीर को जैसे चोट-सी लगी । बोला, "आपको मेरी यह कहानी पसंद नहीं आयी । लेकिन आप साफ-साफ कह देते तब भी मैं बुरा न मानता!"

समीर के कटाक्ष से वासव भी दु:खी हुआ । बोला, "बेटे, मैंने यह तो नहीं कहा कि कहानी मुझे पसंद नहीं आयी । ऐसा कैसे सोचा तुमने?"

"जैसा कि मैंने आप से कहा था, यह मेरी प्रिय कहानी है । ज़ाहिर है कि इसे मैं अपनी सर्वश्रेष्ठ कहानी मानता हूं । कहानी सुनकर यदि आप इसके बारे में कुछ स्पष्टीकरण-सा मांगें तो स्पष्ट है कि यह आपको पसंद नहीं आयी ।" समीर ने क्षोभ-भरे स्वर में कहा ।

"बेशक, तुम्हारी कहानियां श्रेष्ठ हैं । पर यह कहानी मुझ तक पहुंच नहीं सकी । इसलिए इसके बारे में मैंने कुछ और भी जानना चाहा," वासव ने समीर का क्षोभ मिटाने की कोशिश की ।

"आप मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं । जब आपको मेरी कहानी उलझी हुई लग रही है तो वह श्रेष्ठ कैसे हो सकती है?" समीर ने अपनी मन:स्थिति जतलाते हुए कहा ।

इस पर वासव भी झल्ला गया । बोला, "मैंने तुम्हारी पूरी एक सौ एक कहानियां सुनीं । सौ की मैंने प्रशंसा की । केवल एक मेरी समझ में नहीं आयी । उसके लिए मैंने तुम से कुछ जानना चाहा । इसी पर तुम अपना संतुलन खो बैठे हो! अब ज़्यादा बहस मत करो और साफ-साफ बता दो कि इसे लिखने के पीछे तुम्हारा क्या मक़सद था ।"

समीर भी वासव की तरह झल्ला गया था । बोला, "क्या हर कहानी के पीछे मक़सद होना ज़रूरी है? क्या बिना मक़सद के कोई कहानी अच्छी नहीं हो सकती? मैं कहानियां इसलिए नहीं लिखता कि लोगों को उनसे कोई संदेश मिले । मैं केवल इतना ही चाहता हूं कि मैं अपने अनुभवों को सुंदर ढंग से लिखकर लोगों तक पहुंचा सकूं ।"

अब तक वासव संभल गया था । बोला, "मैंने कब कहा कि कहानी में संदेश होना ही चाहिए । सिर्फ इतना ही पूछा था कि यह कहानी तुमने किस मक़सद से लिखी थी । मक़सद अलग होता है और संदेश अलग । वैसे तो हर कहानी का मक़सद, यानी उद्देश्य, ज़रूर होता है । वैसे भी ऐसी कोई कहानी श्रेष्ठ नहीं बन सकती जिसमें घटनाओं को क्रम देकर केवल संदेश पहुंचाने की बात हो । अब कृष्ण-कन्हैया की बाल-लीलाओं की बात लो । कभी यशोदा को तंग करता था और कभी दूसरी तरह का ऊधम मचाता था । अब इन लीलाओं को अगर कहानियों का रूप दिया जाये तो इन में संदेश क्या मिलेगा! फिर भी वे कहानियां पढ़ने वाले अपने बच्चों में नटखट कन्हैया का रूप देखकर खुश होते हैं। छोटे बच्चों के नटखटपन का वर्णन ही इन कहानियों का उद्देश्य है ।"

वासव की बात समीर अब समझ गया था । उसने उस कहनी के पीछे छिपे अपने मक़सद को स्पष्ट किया– 'एक मंदिर था । बहुत ही विलक्षण । वहां कुछ शिल्पी काम करते थे । उन में एक युवा शिल्पी भी था । वह बहुत ही सुंदर मूर्तियों गढ़ता था । पर मुख्य शिल्पी उन मूर्तियों की सुंदरता स्वीकारने को कभी तैयार न हुआ । बल्कि वह अधिकारियों तक वे मूर्तियां कभी पहुंचने ही नहीं देता था । युवा शिल्पी मुख्य शिल्पी के इस व्यवहार से क्षुब्ध हो उठा । उसने एक

दिन विरक्ति में वे सब मूर्तियां तोड़ दीं अ
वहां से एकाएक चल दिया ।'

समीर ने फिर पूछा, "अब बताइए, मे
बात आप तक पहुंची?"

वासव, समीर के मर्म को जान गया था
मंद-मंद मुस्कराते हुए बोला, "पहले
अगर यह सब बता देते तो इतनी बहस
ज़रूरत न पड़ती । खैर, मैं अब भी य
कहूंगा कि इस कहानी पर मैं कोई टिप्प
नहीं दे सकता । तुम्हें मेरी निष्पक्षता
विश्वास करना चाहिए ।"

बहरहाल, अब वासव सपरिवार राजा
यहां गया । राजा से भेंट करने में उसे क
दिक्कत नहीं हुई । राजा से मिलते ही उ
कहा, "राजन्, आपके राज्य में स

कवि-कहानीकार अहंकारी और दंभी हैं। वह तो यहां के साहित्य पर एक प्रकार का चांदनुमा दाग़ है। जनता ऐसे लोगों से क्या ग्रहण कर सकती है!"

वासव की बात पर राजा को आश्चर्य हुआ। "आप किस संदर्भ में बात कर रहे हैं?" उसने पूछा।

वासव ने घुमा-फिराकर समीर की ओर इशारा किया। इस पर राजा बोला, "समीर कौन है? यहां तो उसे कोई जानता भी नहीं।"

राजा की बात पर वासव को हंसी आ गयी। बोला, "राजन्, समीर कोई साधारण कहानीकार नहीं। अगर आप समीर जैसे कहानीकार को नहीं जानते तो यह आपके लिए लज्जा की बात है। ऐसे कवि-कहानीकारों को आप तक पहुंचने से कौन रोक रहा है, इस पर आपको विचार करना चाहिए। यह जानना आपका दायित्व भी है। मैंने जब समीर की कहानियों की उससे प्रशंसा की तो उसे लगा मैं उसका मज़ाक उड़ा रहा हूं। उसे यह भी लगा कि मेरे जैसे लोग ही उस जैसे प्रतिभावान् लोगों को आगे आने से रोकते हैं। दूसरे शब्दों में कहूं तो आप के राज्य में ज़रूर ऐसे कुछ स्वनामधन्य कवि-कहानीकार होंगे जिनका व्यवहार उदीयमान कलाकारों के प्रति अहंकारपूर्ण और तिरस्कारपूर्ण होगा। दरअसल, जितना महान् कलाकार होगा, उतनी ही उस में विनम्रता होगी। उदीयामान कलाकारों के प्रति विनम्र होना तो और भी ज़रूरी है। उन्हें बढ़ावा देना हमारा कर्तव्य है। आप समीर जैसे कलाकारों का ज़रूर पता लगवायें और उनकी राह में रोड़ा बने, अपने को महान् कहनेवाले कलाकारों से उन्हें मुक्त करें।"

वासव का सुझाव वाकई बड़ा महत्त्वपूर्ण था। राजा धर्मसेन ने वासव को विश्वास दिलाया कि वह समीर जैसी सृजनशील प्रतिभाओं को कभी उपेक्षित नहीं रहने देगा। धर्मसेन अब एक कला और साहित्य-प्रेमी राजा के रूप में जाना जाता था।

१८

(ज़ालिम वीरसिंह को नाकामयाबी के बाद नाकामयाबी मिली । जयपुरी से उसने ज़बरदस्ती जो सोने की मूर्ति उठायी थी, वह उसके हाथ से निकल चुकी थी, और राजकुमारी सुकन्या, जिससे वह शादी रचाना चाहता था, बंदर में परिवर्तित हो गयी थी—कम से कम ऐसा ही उसका विश्वास था । फिर जो जौहरी महल में मूल्यवान आभूषणों का दाम लगाने आये थे, वे डाकू निकले!— अब आगे पढ़िए ।)

"मेरा अपने नाती से मिलने के लिए दम निकला जा रहा है," अमृतपुरी का राजा पवित्र एकाएक कह उठा । वह शांतिदेव का ससुर था और वसंत से बातें कर रहा था ।

"राजन्, युवराज संदीप ने शपथ ले रखी है कि जब तक वह अपने पिता का राज्य वापस नहीं ले लेता, तब तक वह आपसे मिलने नहीं आयेगा । लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप उसे देखकर बाग-बाग हो जायेंगे । वह बहादुर भी और सुशील भी । हम सब बाग़ी उसी नेतृत्व में काम करते हैं । अब आ आशीर्वाद से हम वीरसिंह की सेना से सी मुकाबला करने की स्थिति में हैं ।" व ने उसे सूचित किया ।

"वसंत, मुझे अपने नाती पर गर्व लेकिन क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि भी कुछ कर्तव्य बनता है कि मैं तुम्हारे उनके लिए कुछ न कुछ करूं जो सुमेध

ाज्य उसके असली मालिक को दिलवाने ६ लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं और ापनी जान जोखिम में डालकर चल-फिर हे हैं?" राजा पवित्र ने प्रश्न किया ।

"राजन्, क्या आपने अपना कर्तव्य नभाया नहीं? हमारे युवजन को किसने शिक्षित किया? अमृतपुरी की सेना के सवाय हमारे आत्म-विश्वास का आधार । आखिर क्या था? लेकिन हां, राजन्, जब म आखिरी दाव चलेंगे, तब आपकी सेना ो भी अपनी खास भूमिका निभानी होगी, स में जरा-सा भी संदेह नहीं," वसंत ने दहास के साथ कहा ।

राजा पवित्र के सेनापति और मंत्री को लाया गया । चारों अब काफी देर तक आपस में भविष्य का कार्यक्रम बनाने के लिए सलाह-मशविरा करते बैठे रहे ।

"हुजूर, इस बार भी ग़ज़ब हो गया," वीरसिंह के मुख्य गुप्तचर ने उससे बातचीत करते हुए उसे बताया ।

"क्या हुआ?" वीरसिंह ने गंभीरता दिखाते हुए पूछा ।

"वह बंदर फिर एक बार युवरानी सुकन्या बन गया!" गुप्तचर ने कहा ।

"क्या? क्या यह सचमुच हो सकता है! वह अब कहां है?" वीरसिंह उछलकर खड़ा हो गया ।

"वह अब अपने पिता के घर में है, हुजूर! गुप्तचर ने जवाब दिया । "

"जयपुरी में? लेकिन यह कैसे हो सकता है कि शंकर वर्मा ने मुझे अभी तक इसके बारे में सूचना तक नहीं दी!" वीरसिंह विचलित हो रहा था ।

उसने फिर ताव में आकर अपने एक बड़े दरबारी को बुलवाया और उसे ऊंची आवाज में आदेश दिया कि वह फौरन उसके दूत के नाते संदेश लेकर जयपुरी के लिए रवाना हो जाये ।

"मैं शंकर वर्मा पर किसी तरह सख्ती नहीं करना चाहता । आखिर वह मेरा ससुर बनेगा! उसे खबर करो कि मैं खुद राजकुमारी सुकन्या को लिवाने आऊंगा । कह दो कि इस बार मैं बराबर उसके पास ही रहूंगा । मेरे साथ एक जादूगर भी होगा जो इस बात का ध्यान रखेगा कि सुकन्या फिर कहीं बंदर

न बन जाये!"

वाकई कोई बहुत ही छबीला व्यक्ति, जो अपने आप को दावे से एक बहुत बड़ा जादूगर कहता था, अपना रंग दिखाने उसके यहां आया हुआ था ।

दूत ने वीरसिंह का संदेश सरदार शंकर वर्मा के दाबार में पहुंचाया । लेकिन हुआ वही । वह अपना चेहरा लटकाये लौट आया ।

"हुज़ूर!" उसने वीरसिंह को सूचना दी, "मुझे वहां अपमानित किया गया । या मैं यों कहूं कि उन्होंने आपके लिए जी भर अपशब्द कहे!"

"इतनी हिम्मत! मुझे ही अपशब्द कहने वाला आखिर वहां कौन था? किस प्रकार के वे अपशब्द थे?" वीरसिंह ने विस्तार से जानना चाहा ।

"हुजूर! सबसे पहले, शंकर वर्मा ने मुझ से मिलने से सरासर इंकार कर दिया । यह सूचना देने वाला एक युवक था जो अपने को उसका निजी सलाहकार बताता था!" दूत ने कहा ।

बाकी बात बताते हुए दूत को हिचक हो रही थी । वह लाचार था ।

"कहा क्या उसने तुम से?" वीरसिंह ने कुढ़ते हुए पूछा ।

"कि वीरसिंह खुद ही बंदर है, अगर वह यह विश्वास करता है कि राजकुमारी सुकन्या बंदर में सचमुच परिवर्तित हो गयी थी । यह बात एकदम झूठ थी । राजकुमारी तो
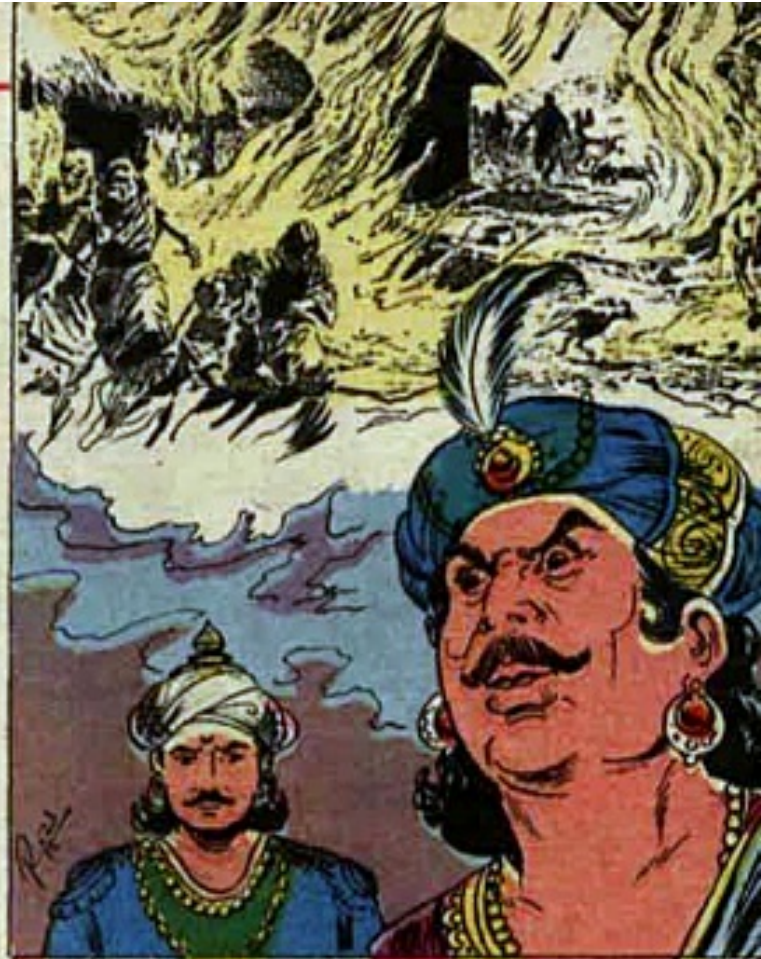
उसके चंगुल से भाग निकली थी, और उसकी ओर से बंदर ने वीरसिंह के लात जड़ी थी । वीरसिंह को बता दो कि हमें इस से ज्यादा और कुछ नहीं कहना!"

"क्या!" वीरसिंह को इतना गुस्सा आ गया कि उसकी ज़बान लड़खड़ाने लगी और वह बुरी तरह कांपने लगा ।

"मैं उस बदतमीज और धोखेबाज शंकर वर्मा को कुचल डालूंगा । मैं सुकन्या की चिंदी-चिंदी कर दूंगा । मैं जयपुरी के हर घर को तबाहकर खाक़ में मिला दूंगा । मैं जयपुरी के हर पुरुष, हर स्त्री और बच्चे का नामोनिशान मिटा दूंगा । हुं! और सुनो, मैं वहां के किसी पशु-पक्षी को भी नहीं बख्शूंगा!" जोर-जोर से चीखकर वीरसिंह

कहते जाने लगा।

"बहुत खूब, हुजूर!" दूत एकाएक बोला।

वीरसिंह इतना उत्तेजित हो रहा था कि थोड़ा-सा ठंडा होने के लिए उसे तीन गिलास पानी पीना पड़ा। फिर उसने सर्पदंत और उसके कुछ विश्वासपात्रों को बुलवाया और घोषणा की, "जयपुरी पर फौरन हमला कर दो! फौरन! इस हमले का चाहे परिणाम कुछ भी हो!"

"परिणाम तो यही होगा कि जयपुरी सुमेध में आ मिलेगा। डर किसी बात का नहीं। इस विजय से हमारे सैनिकों का हौसला बढ़ेगा ही," सर्पदंत ने अपनी बात जड़ दी।

"ठीक है!" वीरसिंह बोला, "काफी अर्से से हमारे सैनिकों को उनकी तनख्वाह के अलावा कुछ और नहीं मिला। जब वे जयपुरी को भींच रहे होंगे, तब जो भी उनके हाथ लगे, वह उनका होगा। लेकिन हां, कीमती आभूषण और नकदी वे हवाले करेंगे! समझे?"

"जी, हां!" वहां के सब ने फौरन मुक्त कंठ से कहा।

सर्पदंत को तो उसका लालच और सेना की मदद से दूसरे की भूमि को अपने कब्जे में लेने की आकांक्षा सता रही थी। उसे यह भी याद न रहा कि जयपुरी के पास अपनी कोई सेना नहीं है और सैनिकों का मुकाबला करने के लिए वहां कोई नहीं होगा। इसलिए युद्ध होने की तो नौबत ही न थी! और बिना युद्ध के क्या हार, और क्या जीत! और जब जीत ही नहीं है, तब सैनिकों का मनोबल बढ़ने की बात कहां उठती है! सिवाय तबाही के और क्या हो सकता है!

उधर वीरसिंह को मारे क्रोध के यहां तक याद नहीं रहा कि जयपुरी के पास हालांकि अपनी कोई सेना नहीं है, लेकिन वह अपनी रक्षा के लिए अमृतपुरी से मदद ले सकता है! दरअसल, क्रोध ने उसे हर प्रकार से अंधा कर दिया था। उसने इस संभावना पर विचार ही नहीं किया था।

लेकिन जल्दी ही उसकी आशंका ने उसे धर दबोचा। जैसे ही सर्पदंत अपनी सेना को नये अभियान के लिए तैयार करने के

उद्देश्य से आगे बढ़ा, वैसे ही वीरसिंह ने अपने नये सलाहकार, यानी उस जादूगर को बुलवा लिया। फिर उसने उसे अपने मन की बात कही और बोला, "मेरे प्यारे जादूगर, क्या कोई ऐसा जादू भी है जिससे हमारे सैनिक और भी बहादुरी से शत्रुओं से लड़ें? मैं नहीं चाहता कि उनकी किसी भी युद्ध में कभी भी हार हो!"

जादूगर ने अपनी दाढ़ी पर अपना हाथ फिराया और मुस्कराते हुए बोला, "हुजूर, मैं तो इससे भी बेहतर कर सकता हूं। मैं घोड़ों के चारे में एक जादुई औषध डालूंगा। इससे वे इतने हिम्मतवाले हो जायेंगे कि न वे बाढ़ से डरेंगे और न ही आग से। वे कभी लौटेंगे ही नहीं! और जब घोड़े नहीं लौटेंगे, तब उनके सवार रहे सैनिक कैसे लौट सकते हैं!"

"क्या खूब!" वीरसिंह सहसा कह उठा।

काफी तेज़ी से काम हो रहा थ। फिर भी सेना जब चढ़ाई के लिए तैयार हुई, तब दोपहर हो चुकी थी। वीरसिंह खुद सेना का नेतृत्व कर रहा था। सर्पदंत उसका सहायक था। उनको सीमांत तक पहुंचते-पहुंचते शाम हो गयी।

"हुजूर, अच्छा यही होगा कि रात हम यहीं रुकें," जादूगर ने सलाह दी। "हम आज रात ही घोड़ों को वह खास औषध देंगे। सुबह होते ही एक-एक घोड़ा पांच-पांच घोड़ों के बराबर हो जायेगा!"

"हां, सुबह होने पर ही हमें चढ़ाई करनी चाहिए, ताकि सारा दिन हमें मिल जाये," वीरसिंह ने सहमति में अपना सर हिलाया।

जादूगर ने चारे में वह जादुई औषध मिला दिया था और घोड़े उसे खाने लगे थे। इस बीच वीरसिंह का दूत एक बार फिर शंकर वर्मा के महल पर गया और उससे सुकन्या को उनके हवाले कर देने को कहा। लेकिन जवाब वही टका-सा मिला।

जैसे ही सुबह हुई, वीरसिंह ने अपने सैनिकों को हुक्म दिया कि वे जयपुरी में दाखिल होकर शंकरवर्मा के किले को घेर लें। "हमारे घोड़ों में जादुई शक्ति है। याद रहे!" उसने उन्हें बढ़ावा देते हुए कहा, "जीत हमारी ही होगी!"

इतना कहकर वीरसिंह अपने घोड़े को

सरपट दौड़ाता हुआ आगे बढ़ा! सर्पदंत उसके साथ था। उनके पीछे-पीछे दूसरे घुड़सवार आ रहे थे। एकाएक वीरसिंह को लगा कि उसका घोड़ा बेकाबू हो रहा है। पहले तो उसे खुशी हुई कि घोड़े में बहुत शक्ति आ गया है, लेकिन जब सभी घोड़े अजीबोगरीब ढंग से हिनहिनाने लगे, तो उसके होश उड़ने लगे। उसने मुड़कर पीछे देखा तो पाया कि सभी सैनिक अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर उन्हें काबू में रखने के लिए बेहाल हो रहे थे।

"आगे बढ़ो! वक्त निकला जा रहा है!" वीरसिंह ने चिल्लाकर कहा। खैर, किसी न किसी तरह वह तथा उसके सैनिक किले तक पहुंच ही गये। लेकिन जब उन्होंने किले को घेरना चाहा, तो घोड़े बिलकुल बेलगाम हो गये। वे अपनी पिछली टांगों पर खड़े हो गये और अपने सवारों को परे फेंकने लगे। जो सवार रकाबों में से अपने पांव निकाल न पाये, वे घोड़ों से लटकने लगे।

"यह माजरा क्या है! जादूगर ने यह क्या कर डाला?" वीरसिंह ने सर्पदंत से पूछा। वह बेहद परेशान था। उन दोनों के लिए अपने-अपने घोड़ों पर बैठे रह पाना दुश्वार हो रहा था।

"इधर देखो, कमीने! मेरा मतलब है—वीरसिंह कमीने!"

ऐसा संबोधन सुनकर वीरसिंह हैरान रह गया। उस संबोधन की आवाज़ भी जानी-पहचानी थी। उसने ऊपर की तरफ देखा। जादूगर एक मेहराब पर चढ़कर मोर्चा संभाला हुआ था।

"मुझे पहचान रहे हो?" अब जादूगर उससे मुखातिब था। उसने अपनी नकली दाढ़ी और टोपी उतारकर परे कर दी थी।

"तुम! तुम शांतिदेव के फ़ितरती मंत्री! तुमने जादूगर के वेश में आकर मुझे धोखा दिया!" वीरसिंह उस पर चिल्लाया।

"हां, मैं ने तुम्हारे घोड़ों को बेकाबू बनाकर तुम्हें सबक सिखाया। लेकिन यह तो अपने मालिक राजा शांतिदेव के प्रति तुम्हारी धोखाधड़ी के मुकाबले में कुछ भी नहीं है। धोखाधड़ी तो तुमने मेरे साथ भी की, क्योंकि मुझे मरवाने की कोशिश की। अब अपने सैनिकों से कहो कि वे हथियार

डाल दें। अगर वे लड़ेंगे तो सभी का काम तमाम हो जायेगा," उस नकली जादूगर, यानी मंत्री ने कहा।

"काम तमाम हो जायेगा? कौन करेगा काम तमाम? तुम और शंकर वर्मा? हा! हा!" वीरसिंह ने अपने जनून में ठहाका लगाया।

"वीरसिंह! अपनी आंखें खोलो और देखो!"

अभी मंत्री ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि सैकड़ों की संख्या में सैनिक किले की फसीलों और छतों पर प्रकट हो गये। वीरसिंह देखता ही रह गया।

शीघ्र ही शंकर वर्मा भी छत पर मंत्री से आ मिला, और बोला, "वीरसिंह, हमने ही तुम्हें उकसाया था कि तुम हम पर चढ़ाई करो। हम खूनखराबा नहीं चाहते थे। मैं तुम्हें सूचना दे दूं कि राजा शांतिदेव का होनहार बेटा, युवराज संदीप, इस समूची योजना के पीछे है। वही इसका संचालन कर रहा है। अगर तुम फौरन अपनी जान से हाथ नहीं धोना चाहते तो उसके सामने माथा झुकाओ और आत्मसमर्पण कर दो। तुम्हारे बचने का कोई रास्ता नहीं। तुम्हारी सेना अमृतपुरी के सैनिकों ने घेर रखी है। ईश्वर की कृपा है कि तुम्हारी गिद्ध दृष्टि से यह इलाका बच गया। शांतिपुर के महल को बहादुर वसंत ने घेर रखा है। उसी के नेतृत्व में तुम्हारे खिलाफ जनता ने बग़ावत की थी। सुमेध के सभी लोग तुमसे नफरत

करते हैं। तुम्हारे सर पर एक टापरा नहीं बचेगा। चलो, आत्मसमर्पण करो!"

वीरसिंह ने चारों तरफ देखा। उसके सैनिक घायल होकर ज़मीन पर लुढ़के थे और दर्द से कराह रहे थे। बाकी कुछ बैठे हुए थे और कुछ खड़े थे घटना-चक्र के एकदम घूम जाने पर स्त हो रहे थे।

"सुमेध के बहादुरो, तुम्हारा अस मालिक यहां खड़ा है, युवराज संदीप!" शं वर्मा ने घोषणा की। युवराज संदीप बढ़कर वहीं शंकर वर्मा के निकट आ था। "बहादुर सैनिको, क्या तुम अ युवराज, अपने असली राजा शांतिदेव सिंहासन के उत्तराधिकारी का अभिवा

नहीं करोगे? बोलो, युवराज संदीप की जय!"

"युवराज संदीप की जय!" सैनिकों ने नारा लगाया।

"शाबाश! हम समझते हैं कि तुम लोगों ने समर्पण कर दिया है! अब अपने हाथियार भी डाल दो। तुम सब को क्षमा प्रदान की जायेगी और तुम सब अपने असली राजा और सुमेध की प्रजा की सेवा करते रहोगे," शंकर वर्मा ने घोषण की। फिर उसने वीरसिंह की ओर देखा और बोला, "वीरसिंह, अब फैसला तुम्हारे हाथ में है- तुम कैद चाहते हो कि दगाबाज़ी के लिए तुम पर मुकदमा चलाया जाये? या कि युद्ध करना चाहते हो? मैं दस तक गिनूंगा!"

वीरसिंह अब भी अपने घोड़े को काबू करने की कोशिश में था। घोड़े ने आखिर उसे नीचे पटक ही दिया और पगलाकर दौड़ने लगा। जैसे ही शंकर वर्मा ने दस तक गिना, अंगरक्षकों ने वीरसिंह को घेर लिया और उसे अपने कब्ज़े में कर लिया। सर्पदंत ने भी आत्मसमर्पण करते हुए अपने हथियार डाल दिये।

सुमेध, जयपुरी और अमृतपुरी में खूब खुशियां मनायी गयीं। ऐसी खुशियां पहले कभी नहीं मनायी गयी थीं। अमृपुरी के राजा पवित्र और उसके नाती युवराज संदीप के मिलाप का दृश्य बड़ा ही द्रावक था। युवराज संदीप, जयानंद की उपस्थिति में राज-तिलक करके राजा बनाया गया। राजा बनने पर संदीप ने पहले जो काम किया, वह था अपने माता-पिता की समाधि पर अपना माथा नवाना और वहां स्मृति-चिह्न बनवाना। इसके बाद दो स्मरणीय घटनाएं घटीं। पहली थी राजा संदीप का सुकन्या से विवाह, और दूसरी थी जयपुरी और अमृतपुरी का सुमेध में विलय, क्योंकि दोनों ही राज्यों के उत्तराधिकारी नहीं थे।

राजा संदीप और रानी सुकन्या ने लंबे अर्से तक राज किया। उनकी प्रजा उनका बराबर जयगान करती रही। (समाप्त)

साहसी श्रीकांत
अपनी धुन के पक्के राजा विक्रम फिर उसी पेड़ के पास पहुंचे, पेड़ की शाखा से लटकती लाश को अपने कंधे पर डाला और पहले की तरह मौन सीधे श्मशान की ओर चल पड़े ।
थोड़ा आगे बढ़ने पर लाश में मौजूद बैताल ने कहा, "राजन्, आप बहुत साहसी और सहनशील हैं जो इस घोर अंधेरी रात में श्मशान में भटकते हुए इतना कष्ट उठा रहे हैं । कभी-कभी साहसी और शूर-वीर व्यक्ति भी वक्त का ख्याल किये बिना अविवेकपूर्ण व्यवहार करके अपना मान और गौरव खो बैठता है । आपको श्रीकांत की कहानी सुनाने जा रहा हूं । आप इसे ध्यान से सुनें ताकि आपका ध्यान भी बंटा रहे और आपको थकान भी महसूस न हो ।" और बैताल वह कहनी सुनाने लगा–
कीर्तिकामी राज्य में किशनगंज एक
बैताल कथाएं

छोटा-सा गांव है । उसी गांव में श्रीकांत नाम का एक साहसी युवक रहता था । वह अनाथ था । बचपन उसका गांव के लोगों की दया के सहारे बीता था । लेकिन जब वह बड़ा हुआ तो मेहनत-मशक्कत करने लगा और आत्म-निर्भर हो गया ।

गांव के पास ही एक जंगल था । उन्हीं दिनों जंगल से एक बाघ गांव में आने लगा और जो कोई भी उसके हाथ लगता, उसे घसीटकर जंगल में ले जाता ।

एक दिन दुपहर के वक्त श्रीकांत जंगल में एक पेड़ पर चढ़कर उसकी सूखी टहनियां तोड़ रहा था कि एक लड़की चीखती-चिल्लाती दौड़ती हुई निकली और पीछे बाघ दौड़ा चला जा रहा था ।

बाघ को देखते ही बिना घबराये श्रीकांत पेड़ से नीचे कूद गया और बाघ का रास्ता रोक कर उसके सामने डटकर खड़ा हो गया । अपने सामने मुकाबले पर तैयार एक व्यक्ति को खड़ा देखकर बाघ घबरा गया । श्रीकांत ने आनन-फानन कुल्हाड़ी से बाघ पर वार कर दिया । चोट खाकर बाघ भी तुंद हो गया और उसने श्रीकांत पर वार किया जिस से श्रीकांत लहूलुहान हो गया, बाघ पर एक और करारा वार किया । यह वार वाकई जानलेवा साबित हुआ, क्योंकि बाघ लुढ़क कर वहीं का वहीं ढेर होता दिखा ।

होते-होते यह खबर गांव तक पहुंच गयी । अब गांव में श्रीकांत की बहुत इज़्ज़त थी । उधर राजा अभिसार को भी श्रीकांत के साहस के बारे में पता चल गया था । उसने उसे अपने यहां बुलवाया और अपने दरबार में उसे सैनिक के पद पर रख लिया ।

कुछ समय बाद पड़ोस के राजा कवलकेतु ने अकारण राजा अभिसार के राज्य पर हमला कर दिया । दोनों पक्षों के बीच भयानक युद्ध छिड़ गया । शत्रु-पक्ष की ओर से एक भाला उड़ता हुआ आया और राजा अभिसार के घोड़े को बींध गया । घोड़ा हिनहिनाया और उस के पिछली टांगों पर खड़े हो जाने से राजा अभिसार लुढ़कने को हुआ । मौके का फायदा उठाते हुए प्रतिपक्षी राजा कालकेतु अब अभिसार का सर काटने को ही था कि श्रीकांत उस पर बिजली की फुर्ती से लपका और एक ही वार में उसकी तलवार उसके हाथ से

छुड़वा दी । फिर उसने उसे घोड़े पर से नीचे घसीटा और उसके गले पर अपनी तलवार की नोक रखकर बोला, "कहो राजन्, अब तो आपने अपनी हार मान ली न!"

अपने राजा की ऐसी गत हुई देख कालकेतु के सैनिकों के होश ख़ता हो गये । वे युद्धभूमि छोड़कर इधर-उधर भागने लगे । युद्ध समाप्त हो गया । राजा कालकेतु बंदी बना लिया गया ।

युद्ध-कला का मामूली-सा ज्ञान भी न रखनेवाले श्रीकांत ने अपने साहस के बल पर राजा अभिसार की जान बचायी थी । इस पर राजा ने उसे अमूल्य वस्तुएं भेंट में देनी चाहीं ।

श्रीकांत उन वस्तुओं को अस्वीकार भी नहीं कर सकता, पर स्वीकार भी कैसे करता? वह मंद मुस्कान के साथ केवल इतना ही बोला, "राजन्, मैं एक सैनिक हूं । सैनिक का मतलब त्याग और बलिदान है । अपने राजा की रक्षा करना उसका कर्तव्य है । आपकी जान बचाकर मैंने तो केवल अपना कर्तव्य निभाया है, विशेष कुछ नहीं किया । इस लिए इन अमूल्य वस्तुओं का मैं किसी तरह से हक़दार नहीं हूं ।"

राजा अभिसार श्रीकांत की राज-भक्ति से बहुत प्रसन्न हुआ । उसने उसे युद्ध-कला में विशेष प्रशिक्षण दिलवाया और फिर उसे अपने अंगरक्षक के रूप में रख लिया ।

समय बीतता गया । एक साल राज्य में बारिश नहीं हुई । चारों तरफ़ त्राहि-त्राहि मचने लगी । भयंकर अकाल के लक्षण दिखाई देने लगे । राजा परेशान था । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये ।

राज्य में विशालाक्ष नाम का एक ज्योतिषी था । उसने राजा से कहा, "राजन्, हमारे राज्य के दक्षिण में काली का एक पुरातन मंदिर है । उसमें एक शिलालेख है जिस में लिखा है कि अगर कोई अपनी बलि देने को तैयार हो और देवी से मन्नत मांगे तो देवी ज़रूर उसकी सुनेगी । शर्त केवल यही है कि जो भी अपनी बलि देने को तैयार हो, उसके मन में किसी प्रकार का संदेह या डर नहीं आना चाहिए ।"

ज्योतिषी जब राजा से बात कर रहा था तो

श्रीकांत भी वहीं पास में खड़ा था । उसने राजा से कहा, "प्रभु, मैं अपनी बलि देने को तैयार हूं । बलि देते समय मेरे मन में किसी प्रकार की शंका या भय नहीं आयेगा । मैं काली मां से मन्नत मागूंगा कि हमारे राज्य में वर्षा हो!"

और इन शब्दों के साथ श्रीकांत काली के मंदिर की ओर चल दिया । मंदिर पहुंचकर उसने गर्भगृह में प्रतिमा की बगल में एक त्रिशूल पड़ा पाया । उसने प्रतिमा को सर नवाकर प्रणाम किया और बोला, "हे जगत जननी! मुझे कृतार्थ करो । मेरे प्राण लेकर हमारे राज्य में बारिश कर दो ताकि अकाल की यह भयंकर छाया यहां से दूर भाग जाये! कृपा करो, मां!"

प्रार्थना कर चुकने के बाद श्रीकांत ने वहां पड़ा त्रिशूल उठाया । उसे वह अपने भीतर घोंपने को ही था कि उसे मां की प्रतिमा से यह आवाज़ सुनाई पड़ी, "श्रीकांत, रुको, मैं तुम जैसे त्यागी का बलिदान नहीं चाहती । जाओ, तुम्हारे राज्य में हरियाली और खुशहाली होगी!"

फिर दूसरे ही क्षण वह त्रिशूल बिजली की कौंध के साथ वहां से छिटका और आकाश की ओर बढ़ते हुए, बदलों से टकराता हुआ ग़ायब हो गया । उसी क्षण बादल फटे और आकाश से मूसलधार बारिश के रूप में धरती पर बरसने लगे ।

श्रीकांत राजधानी में लौट आया । राजा उसे जीवित देखकर बहुत खुश हुआ । उसने राजा को सारी बात विस्तार से कह सुनायी । फिर राजा उसकी तारीफों के पुल बांधने लगा और बोला, "तुम्हारी वजह से ही राज्य अकाल के जबड़ों से बचा! मांगो, तुम क्या मांगते हो! मैं तुम्हें अपने राज्य के एक प्रांत का प्रमुख नियुक्त करना चाहता हूं ।"

श्रीकांत ने केवल इतना ही उत्तर दिया, "राजन्, आपके सेवक की हैसियत से मैंने अपना फर्ज़ निभाया । मैं किसी प्रांत का प्रमुख या सामंत बनना नहीं चाहता । मुझे ऐसे ही रहने दें!"

श्रीकांत के उत्तर से राजा और भी खुश हुआ । उसने रानी से इसके बारे में बात की और रानी के सुझाव पर रानी की खास सहेली से उसकी शादी कर दी गयी । तीन साल ऐसे

ही बीत गये । इस बीच श्रीकांत दो बच्चों का बाप भी बन गया ।

कुछ ही समय बाद कीर्तिकामी राज्य पर एक और संकट टूटा । राज्य के सीमावर्ती जंगल में त्रिजट नाम का एक राक्षस रहता था । पहले तो उसने कभी कोई उत्पात नहीं मचाया था, लेकिन अब वह राहगीरों को पकड़कर उन्हें अपना भोजन बनाने लगा । राजा बड़ा विचलित हुआ । उसे यह भी पता चला कि यह राक्षस बड़ा ही शक्तिशाली और खतरनाक है । वह बड़े पेड़ को एक ही क्षण में जड़-समेत उखाड़ फेंकता है और हाथी-गैंडे जैसे जानवरों को भी एक ही चपेट में धराशायी कर देता है ।

राजा अभिसार ने यह बात अपनी भरी सभा में कही । चारों तरफ तहलका मच गया । फिर राजा बोला, "भेजने को तो मैं सेना की टुकड़ी भेज सकता हूं, लेकिन इससे होग क्या! टुकड़ी का एक भी सैनिक ज़िंदा नहीं बचेगा । इसलिए मैं उसके पास एक दूत भेजना चाहता हूं जो उसे यह संदेशा दे कि वह मानवों को अपना आहार बनाना छोड़ दे, और उसके बदले उसे राजसी पाकशाला से बढ़िया से बढ़िया पकवान भेजे जायेंगे जिन में हर प्रकार के पशुओं का मांस होगा । हां, एक समस्या है । राक्षस के पास दूत बनकर जो भी जायेगा, हो सकता है राक्षस उसे भी अपना आहार बना ले । इसलिए मैं चाहता हूं कि आप में से कोई स्वयं ही आगे आये!"

सभा में सभी चुप थे, पर उनकी नज़र

श्रीकांत की तरफ ज़रूर घूमती थी । राज स्थिति भांप गया । फिर श्रीकांत को ह संबोधित करते हुए बोला, "श्रीकांत, इसर्व पहले तुमने अनेक साहसिक कार्य किये हैं औ अपनी वीरता की धाक जमायी है । अपन प्राणों की बलि देने से भी तुम नहीं चूके । मैं चाहता हूं इस बार भी तुम आगे आओ । मैं जानता हूं तुम जैसा बहादुर और कोई नही है । कहो, क्या विचार है तुम्हारा?"

श्रीकांत थोड़ी देर चुप रहा । फिर बोला "क्षमा कीजिए, प्रभु । मैं उस राक्षस के पास दूत बनकर नहीं जाऊंगा!"

राजा उसका उत्तर सुनकर हैरान औ हताश रह गया ।

बैताल ने अपनी कहानी खत्म कर ली

थी। बोला, ''राजन्, श्रीकांत तो अदम्य साहसी था। युद्धकला में निपुण न होते हुए भी उसने राजा अभिसार की जान बचाने के लिए कालकेतु पर अपनी तलवार से हमला बोल दिया था। फिर वह अपने राज्य को अकाल के मुंह से बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने पर तैयार हो गया। वह ऐसा साहसी वीर है! लेकिन त्रिजट राक्षस के मामले में वह एकदम कायर बन गया। यह क्यों? क्या उसका निर्णय असमंजस में नहीं डालता? क्या यह अविवेकपूर्ण नहीं लगता? आप जवाब दीजिए। सही उत्तर जानते हुए भी यदि आपने उत्तर देने से कोताही की तो आपका सर एकदम फट जायेगा!''

बैताल का विचित्र प्रश्न सुनकर महाराजा विक्रम बोले, ''आदमी के मन में उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं। फिर स्थितियां भी इन्हें निर्धारित करती हैं। जब कोई अविवाहित होगा और दायित्वों से मुक्त होगा तो उसकी स्थिति और होगी, और जब वह विवाहित होगा और दायित्वों से लदा होगा तो उसकी स्थिति दूसरी होगी। जब श्रीकांत ने राजा का दूत बनकर जाने से इंकार किया तो तब उसकी पत्नी थी, वह दो बच्चों का बाप था। उसका ज़िंदा रहना अपनी पत्नी और बच्चों के हित में ज़रूरी था। इसीलिए उसने राक्षस के पास जाने से इंकार किया। इस में असमंजस में डालने वाली बात कोई नहीं, न ही श्रीकांत का निर्णय अविवेकपूर्ण था, और न ही इससे उसका गौरव कम हुआ।''

बैताल को उत्तर देने से राजा का मौन भंग हो चुका था। इसलिए बैताल लाश के साथ एकदम वहां से ग़ायब हो गया और फिर पेड़ पर वैसे ही लटकता हुआ दिखाई दिया। (कल्पित)

(आधार: शिव नागेश की रचना)

'शकरकंद

बात पुरानी है । एक राजा और एक गरीब किसान में मित्रता हो गयी । किसान जंगल के निकट एक झोंपड़ी में रहता था ।

अब जब भी राजा जंगल में शिकार खेलने जाता, वह किसान की झोंपड़ी में ज़रूर रुकता, और वहाँ किसान की पत्नी उसे शकरकंद भूनकर खिलाती । राजा वह शकरकंद बड़े चाव से खाता ।

एक दिन किसान किसी काम से शहर जा रहा था । किसान की पत्नी ने कुछ शकरकंद गठरी में बांध दिये और बोली, "राजा को शकरकंद पसंद है । यह तुम उन्हें दे देना!"

किसान पत्नी की बात टाल न सका । उसने शकरकंद की वह गठरी उठायी और उसे अपने सर पर रखकर शहर की ओर बढ़ चला । लेकिन रास्ते में उसे भूख लगी तो वह गठरी में से छोटे-छोटे शकरकंद निकालकर खाता रहा, और जब वह शहर पहुँचा गठरी में काफी बड़ा एक ही कंद बचा था

किसान खुश था कि चलो राजा के लि कुछ तो बचा! राजा ने चाहे इतना ब शकरकंद कभी देखा भी न हो! उसने निश्च किया कि वह वही राजा को भेंट में देगा ।

किसान जब राजा के महल में पहुँचा राजा दरबार में था । राजा को जब किसान पहुँचने की खबर मिली तो वह दरबार काम से फौरन निबट कर उसे लिवाने आया दोनों मित्र एक-दूसरे से मिलकर खुश हुए

फिर किसान ने अपनी गठरी खोली अ उस शकरकंद को राजा की ओर बढ़ाते ह बोला, "यह मैं आपके लिए ही लाया हूँ मेरी पत्नी की ओर से यह आपके लिए भेंट है

राजा ने बड़े स्नेह से वह शकरक स्वीकार किया और पास ही खड़े सिपाही व ओर उसे बढ़ाते हुए बोला, "जाओ, इसे

ाकर ख़ज़ाने में जमा करवाओ और खज़ांची
कहो कि इसे बड़ी हिफाज़त से रखे । उससे
ह भी कहो कि वह एक हज़ार अशर्फियाँ
ज़ाने में से दे ताकि मैं उन्हें अपने मित्र की
ंट कर सकूँ!"

फिर राजा किसान से बोला, "चलो, अब
लकर भोजन करें!"

बहरहाल, अब राजभवन में यह खबर
ल गयी थी कि राजा एक मामूली-से
कसान के साथ भोजन पर आ रहा है और
सने उसे एक शकरकंद के बदले एक हज़ार
शर्फियाँ भेंट में दी हैं ।

लेकिन इस घटना से राजा की यह शोहरत भी
ली कि राजा बहुत बड़ा दानी है और किसी
च्छ भेंट के बदले बहुत बड़ा उपहार दे सकता
। इसी से एक दरबारी को सूझा कि वह राजा
ी इस उदारता से लाभ उठाये । इसलिए उसने
क बहुत ही बढ़िया नस्ल का घोड़ा खरीदा और
से नम्रतापूर्वक राजा को भेंट करते हुए बोला,
राजन्, इसे मेरी ओर से स्वीकार कीजिए!"

दूसरे दरबारी भी इस दृश्य को देख रहे
थे । उन्हें कौतुक हो रहा था कि जब राजा ने
शकरकंद के बदले एक हज़ार अशर्फियाँ
उपहार में दीं तो इतने बढ़िया घोड़े के बदले
देखो क्या देता है!

लेकिन राजा स्थिति भांप गया था । घोड़ा
स्वीकार करते हुए उसने पास खड़े सिपाही को
बुलाया और उसके कान में कुछ
फुसफुसाया । इसका मतलब यह था कि
जाओ और जाकर खज़ाने में हिफाज़त से रखा
वह शकरकंद ले आओ ।

सिपाही तुरंत ही उस बड़े-से शकरकंद के
साथ लौटा, उसने उसे राजा की ओर बढ़ा
दिया । राजा ने वह शकरकंद उस दरबारी
की ओर बढ़ा दिया, और बोला, "यह
शकरकंद एक हज़ार अशर्फियों की कीमत
रखता है । तुमने मुझे घोड़ा भेंट में दिया है ।
मैं तुम्हें शकरकंद उपहार में दे रहा हूँ ।"

राजा की इस चाल पर सब लोग हैरान
थे । लेकिन उन्हें अब कान हो गये थे कि
राजा इतना सीधा नहीं है और उसे ऐसे ही
बहकावे में नहीं लाया जा सकता ।

चन्दामामा परिशिष्ट - २८

उनके सपनों का भारत

सांझी विरासत

१८८७ में उत्तर प्रदेश के अल्मोड़ा ज़िले में जन्में पंडित गोविंद वल्लभ पंत भारत की स्वतंत्रा की लड़ाई में अग्रणी रहे । स्वतंत्रता मिल जाने के बाद वह देश के प्रशासनिक ढांचे के एक सशक्त स्तंभ थे । १९५५ से १९६१ तक, यानी अपने देहावसान तक, वह भारत के गृह मंत्री रहे । १९५७ में उन्हें भारत रत्न के सम्मान से अलंकृत किया गया ।

देश की स्वतंत्रता-प्राप्ति से कुछ पहले, यानी २१ दिसंबर १९४६ को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण देते हुए उन्होंने भारत के बारे में अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किये:

'भारत का इतिहास हम सब भारतीयों की सांझी विरासत है, क्योंकि हम सब के पुरखे एक हैं । हिंदु और मुसलमान, दोनों को बराबर का हक है कि वे इस महान् देश के शानदार कल पर गर्व करें । बेशक उनके मज़हब अलग-अलग हैं, लेकिन उनकी धमनियों में खून वही बहता है और सालों-साल वे उसी मिट्टी से अपना जीवन पाते रहे हैं । दूसरे, भारत के लंबे इतिहास में मज़हब, वेशाक, तमाम राजनीतिक बवंडरों और उथल-पुथल के बीच अपना स्थान ऊँचा बनाये रहा है, लेकिन भारतीय समाज का आधार सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता ही रहा है ।

क्या तुम जानते हो?

१. बाइसिकल का आविष्कार किसने किया और कब?
२. पहले सर्कस की शुरुआत किसने की और कब?
३. पहला फिल्म स्टुडियो किसने खोला और कब? इस स्टुडियो का नाम क्या था?
४. आज के सिंगापुर की बुनियाद किसने रखी और कब?
५. भारत के राज्यों और केंद्र-प्रशासित प्रदेशों में सबसे छोटा प्रदेश कौन-सा है? उसकी जनसंख्या कितनी है और वहाँ की भाषा क्या है?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)
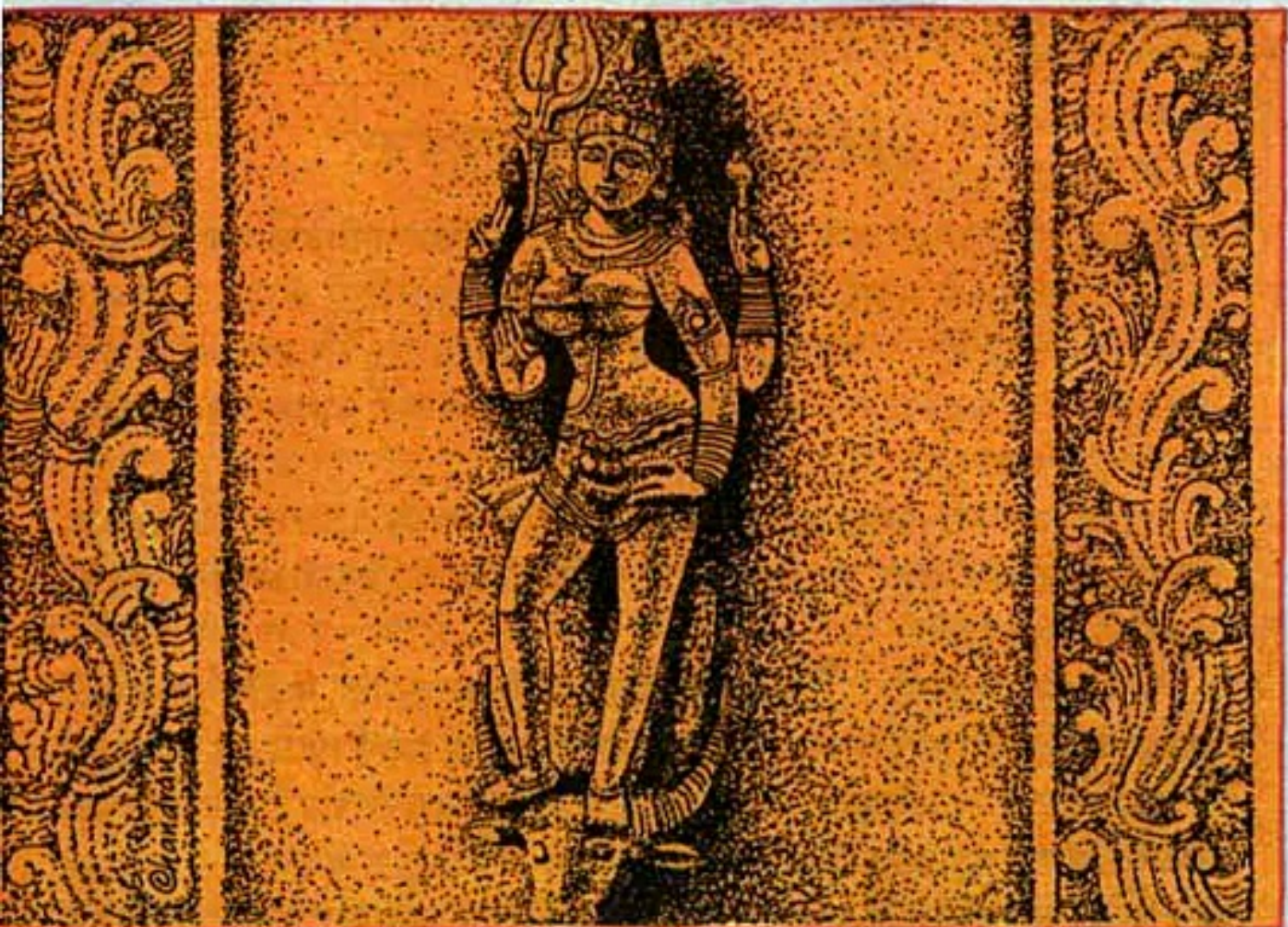
माँ दुर्गा

भारतीय संस्कृति का निर्माण पहले ऋषियों ने ही किया । वे बहुत बड़े द्रष्टा थे और स्थूल आंख की अपेक्षा कहीं अधिक देख सकते थे । उनकी इसी सूक्ष्म दृष्टि के कारण उन्हें 'द्रष्टा' कहा गया ।

उन्होंने जाना कि दैविक शक्ति कई रूपों में अपने को प्रकट करती है, यानी भक्तजनों की आवश्यकता के अनुसार । एक ऐसा प्रकटीकरण माँ के रूप में हुआ । दैविक माँ के भी कई रूप हैं । उनमें दुर्गा शायद सब से अधिक लोकप्रिय है । उसकी, भारत के कई विशाल मंदिरों में कहीं कामाक्षी के नाम से, कहीं कन्या के नाम से, कहीं मूकंबा के नाम से और कहीं भगवती के नाम से—पूजा होती रहती है ।

आम तौर पर उसे भगवान् शिव की अर्द्धांगिनी माना जाता है । पार्वती और सती उसके अवतार हैं ।

उसे दो जोड़ों भुजाओं के साथ दिखाया जाता है । उसकी ऊपर की भुजाओं में विष्णु के चिन्ह यानी शंख और चक्र होते हैं । अपने दूसरे रूपों में (जैसे

महिषासुरमर्दिनी) और भी अधिक भुजाएँ होती हैं ।

उसका वाहन सिंह है ।

वह अपने बच्चों को भटकने से बचाती है, और उन्हें संकटों से उबारती है—यदि वे उसे मन से याद करें तो । वह अपने बच्चों की गलतियों की भी क्षमा करती है—यदि उन्हें उनके लिए दुःख हो तो । वह सार्वभौम माँ है । उसकी ममता सब के लिए एक-सी है ।

दशहरा या नवरात्रि के अवसर पर उसके सम्मान में खूब खुशियां मनायी जाती हैं ।

चंदामामा की खबरें

सबसे मज़बूत फेफड़ों वाला व्यक्ति

जापान के एक ३६ वर्षीय युवक ने पास से गुज़रती गाड़ी से भी ज्यादा ज़ोर से गर्जना करके और गर्जना प्रतियोगिता जीतकर यह प्रमाणित कर दिया कि वह सब से मजबूत फेफड़े रखता है । "अगर तुम युद्ध चाहते हो तो जाओ," योशिहिको काटो ने गरजते हुए कहा । उसकी ध्वनि ११५.८ डेसिबल तक पंहुच गयी, और यह ऊपर जा रही रेलगाड़ी के शोर से १५ प्रतिशत अधिक थी ।

संगीत से उपचार

यह तो तुम जानते ही हो कि अच्छे संगीत से बीमारियों के इलाज में मदद मिलती है । मास्को में चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों तथा संगीतज्ञों की एक टोली ने यह स्थापित किया है कि संगीत से रोगों के प्रति अवरोध बढ़ता है । उसे यह भी पता चला है कि देहाती क्षेत्रों में प्रचलित लोक संगीत वहाँ के घरेलू एवं पालतू पशुओं और पक्षियों के स्वास्थ्य को बढ़ाता रहा है ।

आओ, साहित्य की दुनिया में विचरण करें

१. मिस्र का वह कौन लेखक है जिसे साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला, और कब?

२. किस भाषा ने भारत की सभी भाषाओं पर अपना असर डाला है?

३. दक्षिण भारत की चार भाषाओं में से किस पर उसका सबसे ज़्यादा असर पड़ा है?

४. संस्कृत के अलावा किस भारतीय भाषा का व्याकरण २५०० वर्ष पहले लिखित रूप में उपलब्ध था?

५. जम्मू और कश्मीर में कौन-सी भाषा बोली जाती है?

६. संस्कृत भाषा में सबसे पुरानी उपलब्ध कृति कौन-सी है?

उत्तर

सामान्य ज्ञान

१. किर्कपैट्रिक मैकमिलन ने, १८३९ में।

२. ब्रिटेन के एक भूतपूर्व सैनिक फिलिप एस्टेली ने, १७६९ में।

३. थामस एडिसन ने, १ फरवरी १८९३ को। नाम था ब्लैक मारिया।

४. सर स्टैंफोर्ड रेफल्स ने, १८१९ में।

५. लक्षद्वीप। जनसंख्या : ४० लाख से कुछ ज़्यादा। भाषाः मलयालम।

साहित्य

१. नजीब महफूज़, १९८८ के लिए।

२. संस्कृत।

३. तेलुगु।

४. तमिल। व्याकरण का नाम है: तोलकाप्पियम।

५. डोगरी।

६. ऋग वेद।
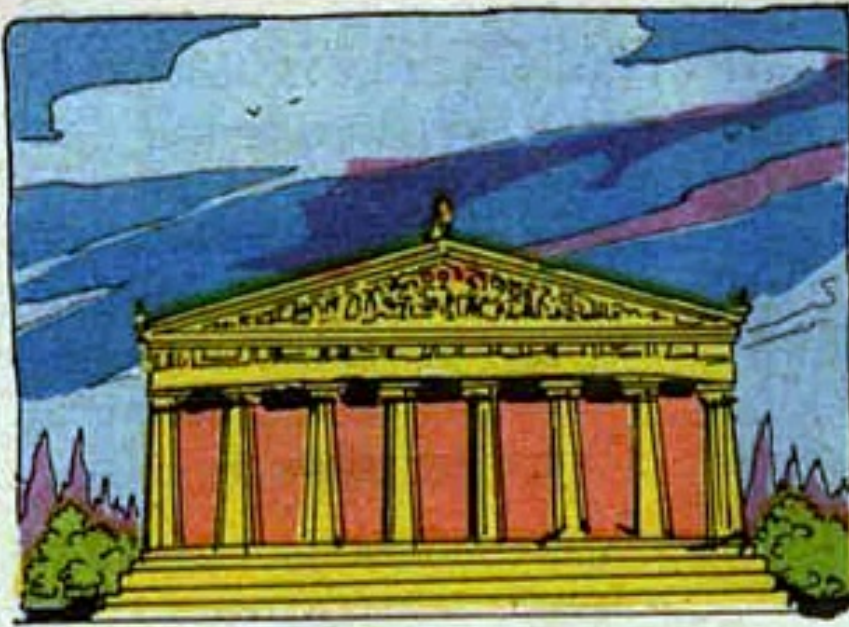
संसार की पौराणिक कथाएँ - ३

चिरनिद्रा का वरदान

आर्गोस में देवी जूनो का मंदिर बहुत ही महत्त्व रखता था । जूनो कृषि देवता सैटर्न की पुत्री और स्वर्ग के देवता ज्यूपिटर की पत्नी मानी जाती है । मंदिर की मुख्य पुजारिन सिडाइप्पे थी ।

सिडाइप्पे के दो पुत्र थे—क्लियोबिस और बाइटन । दोनों ही युवा थे, हृष्ट-पुष्ट थे और स्वस्थ थे । खेल-कूद और शारीरिक प्रतियोगिताओं में वे दोनों अपने प्रतिद्वंद्वियों से कहीं आगे रहते । अपनी माँ, पुजारिन सिडाइप्पे की वे बहुत इज़्ज़त करते ।

एक बार अपनी माँ के साथ उन्हें रथ में बैठकर किसी बंधु के घर जाना पड़ा । बंधु का घर बहुत दूर था । वे रथ पर सवार वहाँ के लिए निकल तो पड़े, पर जब वहाँ पहुँचे तो रथ के दोनों घोड़े मर चुके थे ।

अब उनके लौटने का वक्त आया । दोनों भाइयों ने सिर-तोड़ कोशिश की कि उन्हें वापसी के लिए रथ में जोतने को घोड़े मिल जायें, लेकिन सफलता नहीं मिली । उधर शाम हुई जा रही थी और अगले दिन उनकी माँ को मंदिर में विशेष पूजा के लिए उपस्थित होना था ।

रास्ता बहुत लंबा था और कठिन भी था । सिडाइप्पे की उपस्थिति उस विशेष पूजा के अवसर पर अनिवार्य थी । इतना लंबा सफर पैदल तय करने की सिडाइप्पे में ताकत न थी ।

दोनों भाइयों ने इस समस्या पर आपस में चर्चा की । जब किसी निर्णय पर आये तो माँ से बोले, "चलो माँ, रथ में बैठो!" माँ ने सोचा शायद उन्होंने घोड़ों का इंतज़ाम कर लिया है । वह बिना कुछ बोले रथ में बैठ गयी ।

सिडाइप्पे रथ में बैठी घोड़ों के जुतने का इंतज़ार कर ही रही थी कि उसने पाया कि उसके दोनों बेटे घोड़ों की तरह स्वयं ही रथ के आगे जुत गये हैं । इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, रथ दौड़ पड़ा और रुकने का नाम नहीं ले रहा था । बड़ा विचित्र दृश्य था यह ।

रास्ते में कहीं-कहीं चढ़ाई भी आ जाती थी । तब क्लियोबिस और बाइटन को पूरा ज़ोर लगाते हुए दौड़ना पड़ता । फिर एक बार बारिश आ गयी । पर दोनों भाई दौड़ते ही रहे । वे कहीं नहीं रुके । मंदिर में पूजा का वक्त नज़दीक आ रहा था । वे बराबर दौड़ते ही जा रहे थे ।

सबह हुई और वे नगर में दाखिल हो गये । जिस किसी ने उन्हें देखा, उनकी हिम्मत की दाद दिये बिना न रह सका । कुछ ने तालियाँ भी बजायीं और उनकी मातृ-भक्ति की भरपूर प्रशंसा की । रथ के साथ दोनों भाई पसीने से लथपथ, हांपते हुए मंदिर की सीढ़ियों के पास आकर ही रुके ।

पूजा खत्म हो चुकी थी । अब पुजारिन माँ को अपने बेटों का ख्याल आया । उसने देवी जूनो से विशेष मन्नत मांगी कि उसके पुत्रों को कभी कोई कष्ट न हो और वे सांसारिक दुःखों से बचे रहें । और यह भी कि मानव जाति उनकी भक्ति भावना पर गर्व करे ।

इतना लंबा और कठिन सफर तय करने के बाद दोनों भाई थक तो बहुत गये थे । इसलिए जैसे ही वे अपनी थकान मिटाने के लिए लेटे, वैसे ही नींद ने उन्हें आ घेरा । लेकिन एक बार नींद में उतरने के बाद वे कभी लौटे नहीं । ऐसे ही सप्ताह, महीने और वर्ष बीत गये । एक बार सोये तो फिर कभी जगे नहीं ।
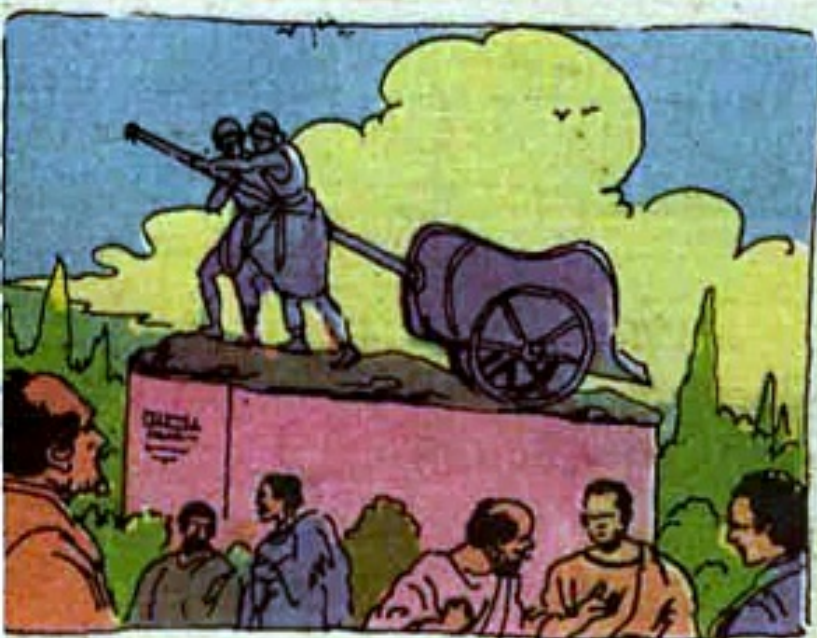
माँ की देवी से मांगी मन्नत पूरी हो गयी थी । दोनों भाई सांसारिक दुःख-सुख से ऊपर उठ गये थे । उन्होंने वे सब कभी जाने ही नहीं । आर्गोस के लोगों को वाकई उन पर गर्व था । उन्होंने उनकी याद में विशाल मूर्ति तैयार करवायी और उसे नगर के बीचोंबीच स्थापित करवा दिया ।

स्वाभिमान

कल्याणपुर में सुधर्म नाम का एक मजदूर रहता था । वह बहुत मेहनती था । मेहनत की कमाई से ही वह अपने परिवार का पेट पालता था । वह स्वाभिमानी भी था । कोई काम न मिलने पर वह अपने परिवार के साथ भूखा ही सो जाता । भीख मांगने से उसके स्वाभिमान को चोट पहुँचती ।

गाँव के लोगों को इस बात की जानकारी थी कि गरीब होते हुए भी सुधर्म में आत्मसम्मान है, पर कुछ लोग उसके इस स्वाभिमान की भावना को घमंड समझ कर उस को दूर रखते थे ।

उसी गाँव में श्रीपति नाम का एक व्यापारी भी रहता था । वह बहुत बेईमान था । गरीबों और जरूरतमंदों को वह पैसा उधार देकर उस से ज़्यादा से ज़्यादा ब्याज वसूलता था । सुधर्म को श्रीपति से कभी उधार लेने ही नौबत नहीं आयी । इसलिए श्रीपति उसे घमंडी समझता था ।

एक बार श्रीपति का समधी रमानाथ उससे मिलने आया । वह दूसरे गाँव में रहता था । कुछ दिन अतिथि का सत्कार पाने के बाद उसे ध्यान आया कि उसे इस गाँव के सुधर्म से भी कुछ काम है । उसने श्रीपति से कहा, "समधी जी, इस गाँव में सुधर्म नाम का एक मज़दूर रहता है । क्या आप उसे यहाँ बुला सकते हैं?"

इस पर श्रीपति ने मुंह बना कर कहा "सुधर्म तो बड़ा अहंकारी है । आपको उससे क्या काम है?"

समधी की बात सुनकर रमानाथ कुछ हैरान हुआ । वह अच्छी तरह जानता था कि सुधर्म एक बहुत ही स्वाभिमानी, मेहनती और ईमानदार व्यक्ति है, और घमंडी तो बिलकुल नहीं । उसने कहा, "सुधर्म कभी-कभी हमारे गाँव में मेहनत-मजदूरी

नारायण वर्मा

करने आता है। आत्मसम्मान की भावना ज़रूर उस में काफी कुछ है, मगर इस का हम यह मतलब नहीं निकाल सकते कि वह अहंकारी है। मेरे खयाल से जरा भी वह घमंडी नहीं है। यह आपकी सरासर ग़लतफहमी है।"

श्रीपति हंस कर बोला, "पर उसे तो सभी घमंडी मानते हैं।"

"सबकी बात छोड़िए" रमानाथ ने उत्तर दिया, "आप कैसे उसे घमंडी मान बैठे हैं? क्या आप को स्वाभिमान और घमंड में भेद नहीं मालूम?"

श्रीपति ने बात बदल कर कहा, "चलो यही सही, पर यह तो बताइए, आपको उससे काम क्या है?"

"सुधर्म ने हमारे गाँव के त्रिनाथ नाम के किसान के खेत में तीन दिन काम किया था। त्रिनाथ ने उसकी मज़दूरी मेरे हाथ भिजवायी है।" रमानाथ ने उत्तर दिया।

यह सुनकर श्रीपति ने अपने नौकर को बुलवाया। रमानाथ अपने समधी की ग़लतफहमी दूर करना चाहता था। इसलिए उसने नौकर से कहा, "सुधर्म से इतना कहना कि तुम्हारे मालिक ने एक जरूरी काम से उसे तुरंत बुलाया है। मेरे आने की उसे जानकारी मत देना।"

नौकर जब सुधर्म के घर पहुँचा, वह सामने ही एक पेड़ के नीचे अपने किसी काम में जुटा हुआ था। पास ही एक बूढ़ा भी बैठा था। श्रीपति के नौकर से उसकी बात सुनकर सुधर्म उपेक्षा से बोला, "तुम देख रहे हो कि मैं इस समय काम में लगा हुआ हूँ। इसे
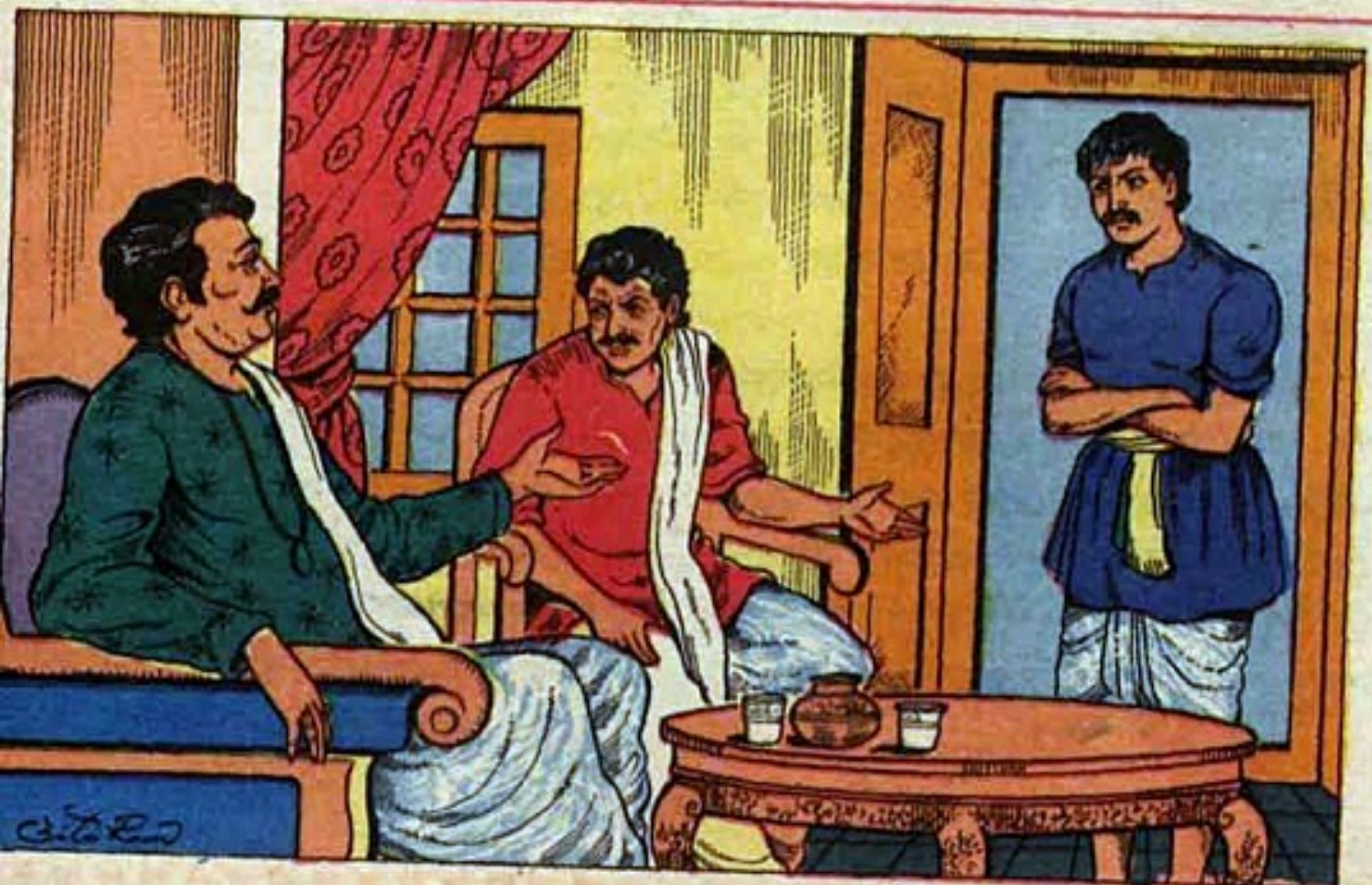
अधूरा नहीं छोड़ सकता। अगर तुम्हारे मालिक को मुझ से ज़रूरी काम है तो वह खुद यहाँ आ सकते थे। मुझे तो उनसे कोई काम नहीं।"

सुधर्म की बात बूढ़े को अच्छी नहीं लगी। वह बोला, "यह क्या कह रहे हो, बेटा! श्रीपति इस गाँव का बड़ा आदमी है। उसके बुलाने पर तुम खुद न जाकर उसे यहां बुलाओ, यह ठीक नहीं लगता!"

इस पर सुधर्म हंस कर बोला, "आप नहीं जानते दादा कि श्रीपति किस तरह ग़रीब कर्ज़दारों का खून चूसता है। वह इसी तरह बड़ा आदमी बना है। ब्याज में वह खूब पैसा ऐंठता है।"

श्रीपति के नौकर ने लौटकर रमानाथ को बताया कि सुधर्म ने आने से इंकार कर दिया है।

यह जानकर श्रीपति क्रोध से पागल हो गया और उफनते हुए बोला, "देखा आपने, वह कितना घमंडी और बदज़बान है। क्या अब भी आप उसे स्वाभिमानी कहेंगे?"

रमानाथ ने श्रीपति को शांत करना चाहा, "समधी जी, आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि सुधर्म आपका नौकर नहीं है कि आपका आदेश पाते ही यहाँ हाज़िर हो जाये।"

"पर उसे मेरी इज्ज़त का तो ख्याल रखना चाहिए था। मैं इस गांव का एक प्रमुख व्यक्ति हूँ।" श्रीपति ने उसी तरह उफनते हुए कहा।

रमानाथ कुछ देर तक मौन रहा। फिर वह बोला, "जिन्हें आप से कुछ लेना-देना हो, वे तो बिन बुलाये भी आपके सामने हाथ जोड़ कर खड़े रहेंगे। लेकिन सुधर्म को आप से

क्या पड़ी है!"

श्रीपति अब चुप था, पर फिर भी उसे रमानाथ की बात पर विश्वास नहीं हुआ। रमानाथ भी यह समझ रहा था। इसलिए अपनी बात पर कायम रहते हुए उसने कहा "समधी जी! मैं अभी फौरन यह सिद्ध कर सकता हूँ कि सुधर्म स्वाभिमानी व्यक्ति है, घमंडी नहीं।" फिर उसने श्रीपति के नौकर को बुलाकर कहा, "तुम सुधर्म से जाकर कहो कि तुम्हारे मालिक को उससे जरूरी काम है, पर वह बीमार होने के कारण उसके यहाँ आ नहीं सकते।"

श्रीपति की बीमारी की खबर पाते ही सुधर्म तुरंत वहाँ दौड़ा आया, और श्रीपति को नमस्कार करते हुए बोला, "मुझे अभी आपके बीमार होने की खबर मिली है। अब आप कैसे हैं?"

श्रीपति ने हंस कर कहा, "मुझे कोई बीमारी-वीमारी नहीं है। मेरे समधी तुमसे मिलना चाहते थे।"

अब सुधर्म रमानाथ से मुख़ातिब था। रमानाथ ने सुधर्म को उसकी मज़दूरी के पैसे सौंप दिये। सुधर्म ने वे पैसे लेकर दोनों को नमस्कार किया और वहाँ से चलता बना।

जैसे ही सुधर्म वहाँ से हटा, रमानाथ ने श्रीपति से कहा, "अब तो आपको विश्वास हो गया न, कि सुधर्म स्वाभिमानी है, घमंडी नहीं। यदि वह घमंडी होता तो उस बार भी आपके बुलाने पर न आता। आपकी बीमारी की खबर पाते ही उसे आपसे हमदर्दी हो आयी। तभी वह तुरंत चला आया।"

अब श्रीपति की आँखें खुल गयीं। उसने रमानाथ की बात को स्वीकारते हुए कहा, "वाकई, मनुष्य के स्वभाव को समझना बहुत मुश्किल है। मैं आज तक यह नहीं जान पाया था कि सुधर्म एक सच्चा हमदर्द और नेक इनसान है। मैं उसे यों ही घमंडी समझता रहा। यह मेरी भूल थी। मनुष्य का स्वाभिमान इसी में है कि वह ग़रीब होते हुए भी किसी के आगे हाथ न फैलाये।"

स्वयंप्रभा की मदद से जब वानर उस सुरंग में से बाहर आये तो उनके सामने विशाल सागर ऊंची-ऊंची कुलांचें भरता हुआ खूब शोर मचा रहा था ।

विंध्य पर्वत की दक्षिण-पश्चिम दिशा में कुछ वानर इधर-उधर फल-वृक्षों के नीचे बैठे गहरे सोच में थे, क्योंकि सुग्रीव द्वारा उन्हें दी गयी अवधि समाप्त हो चुकी थी । उन्हें डर था कि किष्किंधा लौटने पर सुग्रीव का गुस्सा ज़रूर उन पर क़हर ढायेगा ।

स्थिति के पक्ष-विपक्ष पर विचार करते हुए युवराज अंगद ने वानरों को संबोधित करते हुए कहा, "मित्रो, सुग्रीव द्वारा निर्धारित अवधि तो तभी समाप्त हो गयी थी जब हम उस सुरंग में थे । यह बात हम में से किसी पर छिपी नहीं है । पहले सुग्रीव ने हमें पंद्रह दिनों के लिए बुलवाया था । फिर दस दिनों के लिए बुलवाया । अब हमें लौटने के लिए एक महीने की अवधि दी । वह भी समाप्त हो गयी है । हमें अब क्या करना चाहिए, इस पर सब मिलकर गहराई से विचार करो ।

"सीता का पता हम अब तक भी नहीं लगा पाये । किसी तरह से भी हमने सुग्रीव के आदेश का पालन नहीं किया । उसके स्वभाव से आप सब भली भांति परिचित ही हैं, वह अतिक्रूर है ।"

"हमें बिलकुल नहीं बख़्शेगा, ऐसा मुझे लगता है । मौत हमारे लिए निश्चित है । इसलिए बेहतर यही होगा कि हम यहीं

संपाती की कथा

उपवास करके अपने प्राण त्याग दें ।"

"सुग्रीव की मेरे प्रति कोई सद्भावना नहीं है । मुझे युवराज बनाने वाले राम हैं, सुग्रीव नहीं । सुग्रीव को मौका मिले तो वह मुझे एकदम अपने रास्ते से हटा देगा । इसलिए बजाय इसके कि मैं किष्किंधा में अपनी जान दूं, यहीं इसी सागर तट पर मेरे लिए अपने प्राण त्याग देना बेहतर होगा ।"

अंगद की बात सुनकर दूसरे वानर वीर सन्न पड़ गये । उनसे मुंह खोलकर बोला तक नहीं जा रहा था ।

तब किसी तरह उनमें से एक बोला, "हम तभी सुग्रीव के पास जायेंगे जब सीता की खबर पा जायेंगे, वरना हम यहीं खत्म हो जायेंगे ।"

"हम यहीं क्यों खत्म हों?" अब तार ने भी साहस जुटा लिया था, "इससे बेहतर तो यही होगा कि हम वापस सुरंग के पार जायें और वहां सुख-शांति से रहें । वहां तो खाने को पार्याप्त मात्रा में भोजन है । हर प्रकार की सुविधाएं वहां हैं, किसी प्रकार की कोई चिंता नहीं । वहां न सुग्रीव हम तक पहुंच सकेगा, न राम ही ।"

हनुमान् अंगद, तार और अन्य वीरों की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था । उसे ये तर्क-वितर्क अच्छे नहीं लगे । वह मन ही मन सोचने लगा-अंगद इस तरह की बातें कर एक-न-एक दिन सुग्रीव से ज़रूर उसका राज्य छीन लेगा । बालि का पुत्र जो ठहरा! सूक्ष्मग्राही तो यह है ही । देश-काल को और नाजुक स्थिति को भी वह खूब अच्छी तरह समझता-परखता है ।

फिर उससे प्रत्यक्ष में बोला, "हे अंगद, तुम अपने पिता से बढ़कर योद्धा नहीं हो । ये चपल-चंचल वानर हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे । इनका अपना परिवार है, अपने बाल-बच्चे हैं ।

"जंबवान को या मुझे, या अन्य वीरों को अपने पक्ष में करना तुम्हारे बस का नहीं । यह सुरंग लक्ष्मण के बाणों के सामने टिक नहीं पायेगी । वह इसे कुछ ही समय में छिन्न-भिन्न कर देगा । यदि तुम सुग्रीव से शत्रुता करके इस सुरंग में आश्रय चाहोगे तो ये वानर तुम्हारा साथ छोड़ देंगे, और तब तुम बिलकुल अकेले पड़ जाओगे और तिनके की

तरह इधर-उधर लुढ़कते फिरोगे। तुम अच्छी तरह सोच लो।"

"और यह भी तुम मत भूलो कि राम-लक्ष्मण तुम्हें बख्श देंगे! तुम सुग्रीव को नाहक लांछित कर रहे हो। वह एक न्यायप्रिय और धर्मनिष्ठ राजा है। तुम नहीं जानते, वह तुम्हारे प्रति सद्भावना रखता है। वह तुम्हारी मां का भी बहुत मान-सम्मान करता है, और वह तुम्हें अपना पुत्र-समान समझता है!"

लेकिन हनुमान् की बातें अंगद के गले नहीं उतरीं।

उस ने फिर तर्क किया, "मैं तुम पर कैसे विश्वास कर लूं। सुग्रीव में किसी प्रकार का कोई गुण नहीं। उसके बड़े भाई ने जब उसे गुफा के द्वार पर पहरा देने के लिए खड़ा किया था, और वह स्वयं गुफा के भीतर शत्रु से लड़ रहा था तो सुग्रीव ने एक बड़ी चट्टान से गुफा का द्वार ही बंद कर दिया था।

"राम ने उसका इतना उपकार किया, पर बदले में उसने क्या किया? उलटे राम को उसने भुला ही दिया।

"अब अगर वह सीता की खोज में लगा है तो लक्ष्मण के डर से, सौजन्यतावश नहीं। आज जो मैं कह रहा हूं, यह सब उस तक पहुंचेगा ही, जरूर पहुंचेगा, और वह मुझे जीवित छोड़ेगा नहीं। इसलिए किष्किंधा लौटना मुझे किसी प्रकार भी हितकर नहीं लगता। अच्छा यही है कि मैं यहीं उपवास करते-करते अपने प्राण त्याग दूं। तुम लोग

लौट जाना चाहो तो जाओ और राम-लक्ष्म[illegible] तक मेरी बात पहुंचा दो।"

यह सब कहने के बाद अंगद अपनी म[illegible] तारा को याद कर दु:खी होने लगा। वह भूमि पर कुश बिछाकर उदासी से उस पर ले[illegible] गया।

उसे इस प्रकार दु:खी मन से कुश पर लेट[illegible] देख अन्य वानर भी दु:खी हो उठे। उन में से कुछ रोने लगे।

वे वानर अब समझ गये कि अंगद क[illegible] निर्णय अब बदलेगा नहीं। इसलिए वे साग[illegible] में उतरे, वहां स्नान किया और अंगद के पास लौटकर उसी की तरह वे भी कुश बिछाकर भूमि पर लेट गये। लेटे-लेटे फिर वे आपस में कई प्रकार के विषयों पर विचार-विमर्श[illegible]

करते रहे ।

उन्होंने राम-वनवास, सीताहरण, जटायु का रावण से युद्ध, बालि-वध, इस प्रकार से सीता की खोज, हर विषय पर बातचीत की ।

वानरों की इस बीतचीत से वहां काफी-कुछ शोर हो रहा था ।

यह शोर अपनी गुफा में विश्राम कर रहे एक गिद्ध तक भी पहुंचा । एकाएक गुफा से वह बृहत् शरीरवाला गिद्ध बाहर आया और इतनी भारी संख्या में एकत्रित उन वानरों को देखकर अनायास ही कह उठा, "ओह, मज़ा आ गया । अब तो मैं पेट भरकर खाऊंगा!"

गिद्ध का ऐसे कहना सुन वानर घबरा गये, अंगद भी घबरा गया ।

इस तरह डरकर वह हनुमान् से बोला, "यह सूर्य-पुत्र संपाती है । इसने रावण और जटायु के बीच युद्ध होते देखा है । राम के लिए जटायु ने अपने प्राण खो दिये । यदि हम भी राम के लिए इस भक्ति के साथ अपने प्राण न्योच्छावर कर पाते तो कितना अच्छा होगा!"

अंगद की बात सुनकर संपाती एकाएक गरज उठा, "कौन है यह दुष्ट जो यह कहने का साहस कर रहा है कि जटायु अब इस दुनिया में नहीं है । मेरे दिल को इस तरह कटु वचन से बेहद चोट पहुंचाने वाला यह दुष्ट कौन है?"

फिर उसने अपनी आवाज़ को कुछ कोमल किया और बोला, "हे वानरो, सूर्य की किरणों ने मेरे पंख जला दिये हैं । अब मैं उड़ने के काबिल बिलकुल नहीं हूं । मैं इस चट्टान से उतरकर नीचे नहीं आ सकता । तुम लोग मुझे नीचे उतारो!"

संपाती की बातों पर वानरों को विश्वास नहीं हुआ, अभी तो वह कह रहा था कि उसे पेट-भर खाना मिलेगा, और अब चट्टान से नीचे उतरने के लिए उन की मदद की याचना कर रहा है!

बहरहाल, अंगद ने उस पर दया की । वह कुश पर से उठा, चट्टान पर गया और संपाती को नीचे ले आया । फिर वे दोनों आपस में बातें करने लगे ।

अंगद ने उसे अपनी स्थिति समझाते हुए कहा, "इक्ष्वाकु वंशी राजा दशरथ का पुत्र राम अपने पिता का वचन-पालन करने के

लिए अपने छोटे भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ वनवास बिताने दण्डकारण्य चला आया था।

"जब वह यहां रहने लगा तो रावण नामक राक्षस एक दिन धोखे से जबरदस्ती सीता को उठाकर ले गया।

"रावण सीता को उठाये आकाश-मार्ग से जा रहा था कि जटायु की नज़र उस पर पड़ गयी। जटायु दशरथ का मित्र भी था। इसलिए रावण और जटायु के बीच देखते-देखते युद्ध छिड़ गया था। वह युद्ध काफी घमासान था।

"जटायु सीता को रावण के चंगुल से छुड़ाना चाहता था। इस लिए उसने जान की बाजी लगाए युद्ध किया था, पर जटायु सीता को छुड़ा नहीं पाया और इसी प्रयत्न में उसने अपनी जान गंवा दी।

"राम ने जटायु का विधिवत् अग्नि-संस्कार किया, हमारे क्षेत्र में आकर उसने मेरे चाचा सुग्रीव की सहायता करने के उद्देश्य से मेरे पिता बालि का वध किया और अपने दिये वचन के मुताबिक सुग्रीव को वानर-राजा बना दिया।

"अब सुग्रीव के आदेश पर ही हम यहां सीता की खोज में आये हैं। हम ने अनेक जगहें ढूंढीं, लेकिन हमें सीता का पता नहीं चल पा रहा। यदि हम खाली हाथ लौटते हैं तो सुग्रीव के हाथों या राम के हाथों हमारी मौत निश्चित है।"

अंगद की बात सुनकर संपाती काफी

विचलित हो उठा था।

वह ज़ोर से बोला, "जिस जटायु की तुम बात कर रहे हो, वह मेरा छोटा भाई था। मैं तो अब बूढ़ा हो गया हूं। मेरे पंख भी नहीं रहे। इसलिए रावण से बदला मैं नहीं ले सकता।

"मेरे पंख तो तभी जल गये थे जब मैं ने जटायु को सूर्य के ताप से बचाने के लिए उसे अपने पंखों की छाया दी थी। तब हम दोनों प्रतिस्पर्धा में उड़ते हुए सूर्य के बिलकुल निकट पहुंच गये थे। मेरे पंख जल जाने से मैं यहीं विंध्य पर आ गिरा, और तब से मैं यहीं पर हूं। जटायु की मुझे कोई खबर नहीं लगी। अब तुम्ही...!"

अंगद भी बेचैन तो था ही। वह संपाती से

बोला, "क्या तुम मुझे इतना बता सकते हो कि वह दुष्ट रावण किस दिशा में, यानी कहां रहता है?"

"हे वानर वीर!" संपाती ने उत्तर दिया, "मैंने रावण को तब देखा था जब वह एक सुंदर स्त्री को उठाये लिये जा रहा था । वह स्त्री उससे छूटने के लिए छटपटा रही थी । वह 'हे राम! हे लक्ष्मण!' पुकारती हुई चिल्ला रही थी । अब मैं सोचता हूं, ज़रूर वह सीता ही रही होगी ।

"रावण नामक वह दुष्ट राक्षस लंका में रहता है । वह विश्रवा का पुत्र है । कुबेर का वह छोटा भाई है । यहां से सागर के बीचोंबीच, एक सौ योजन की दूरी पर, एक द्वीप है । उसे ही लंका कहते हैं ।

"यदि तुम सागर को लांघकर लंका पहुंच सको तो रावण का पता-ठिकाना तुम अवश्य पा जाओगे । सीता भी मेरे खयाल मे वहीं होगी । राम यदि रावण का वध कर दे तो इससे मेरे मन को भी शांति मिलेगी । मेरे भीतर जलने वाली बदले की आग का शमन होगा । अब तुम लोग इस सागर को लांघने के उपाय सोचो ।"

संपाती की सलाह वानर-वीरों को जंची । वे उसे सागर तट पर ले गये, जहां उसने अपने मृत भाई जटायु का जलतर्पण किया । अब सभी वानर खुश थे कि उन्हें सीता का तो कम से कम पता चल गया है ।

फिर भी जांबवान सीता के बारे में कुछ और जानकारी चाहता था । इसलिए संपाती उसे विस्तार से बताने लगा:

"मेरे पंख जल जाने के बाद मैं जब से विंध्य पर्वत पर गिरा हूं तब से मैं यहीं पर हूं । मैं बूढ़ा हो गया हूं । इसलिए मेरा बेटा सुपार्श्व मुझे यहीं खाना ला देता था । एक दिन वह सूर्य डूबने तक भी नहीं लैटा । और जब लौटा तो खाली हाथ था । वह मेरे लिए खाना नहीं लाया था । उधर मैं भूख से बेहाल हो रहा था । इसलिए मेरा उस पर गुस्सा आना स्वाभाविक था ।

"तब मुझे शांत करते हुए मेरा बेटा सुपार्श्व बोला,कि जब वह महेंद्र पर्वत पर था तब उसने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो एक सुंदर स्त्री को उठाये लिये जा रहा था । वह व्यक्ति बड़ा बलिष्ठ था । फिर भी उसने

आहार के लिए उसे ही पकड़ने की सोची, और उसी उद्देश्य से वह उसके निकट गया । पर उस व्यक्ति ने रोब के साथ उससे याचना की कि वह उसे जाने दे और सुपार्श्व उसकी बात मान गया ।

"उस व्यक्ति की गति काफी तेज़ थी । बाद में सुपार्श्व को आकाश के प्राणियों से पता चला कि वह व्यक्ति और कोई नहीं, रावण ही था, और राम-लक्ष्मण को बार-बार पुकारने वाली वह स्त्री सीता थी । इस प्रकार मेरे बेटे ने जाना कि रावण ज़बरदस्ती सीता को उठाये लिये जा रहा है । लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी । रावण अब उसकी पहुंच से बाहर था ।

संपाती से सारी बात जानकर वानरों ने वापस उसे चट्टान पर पहुंचा दिया । चट्टान पर पहुंचने के बाद संपाती ने उन्हें अपने कुछ और अनुभव भी बताये । वे इस प्रकार थे–

"पंख जल जाने के बाद जब मैं इस विंध्य पर्वत पर गिरा, उस समय यहां एक आश्रम था । उस आश्रम में निशाकर नाम के एक महर्षि रहते थे । यह बहुत पुरानी बात है । पर्वत पर गिरने के बाद मैं गिरता-पड़ता, ऊबड़-खाबड़ रास्तों को पार करता, उसी आश्रम की ओर बढ़ा । रास्ते में एक पेड़ था । मैं उसी पेड़ के नीचे बैठ गया और महर्षि के वहां से गुज़रने का इंतज़ार करने लगा । तब वहां एक विचित्र घटना घटी । दक्षिण दिशा से जब वह महर्षि स्नान के बाद लौट रहे थे तो उनके पीछे-पीछे रीछ, मृग, बाघ, हाथी, सांप इत्यादि भी चले आ रहे थे । लेकिन जैसे ही वह महर्षि अपने आश्रम में दाखिल हुए, वैसे ही वे सब जीव अपनी-अपनी राह चले गये । आश्रम में दाखिल होते समय महर्षि ने मुझे देखा था । इसलिए कुछ ही देर बाद वह बाहर आये और मुझ से बोले– तुम संपाती हो न! मैं तुम दोनों भाइयों को जानता हूं । तुम गिद्धों के राजा थे न? तुम्हारे छोटे भाई का नाम क्या जटायु है? तुम दोनों कभी-कभी मनुष्य-रूप धारण करके मुझे प्रणाम किया करते थे । क्या तुम अब बीमार हो? तुम्हारे पंखों के इस तरह बेकार होने का क्या कारण है? क्या तुम्हें किसी ने किसी प्रकार से दंडित किया है?
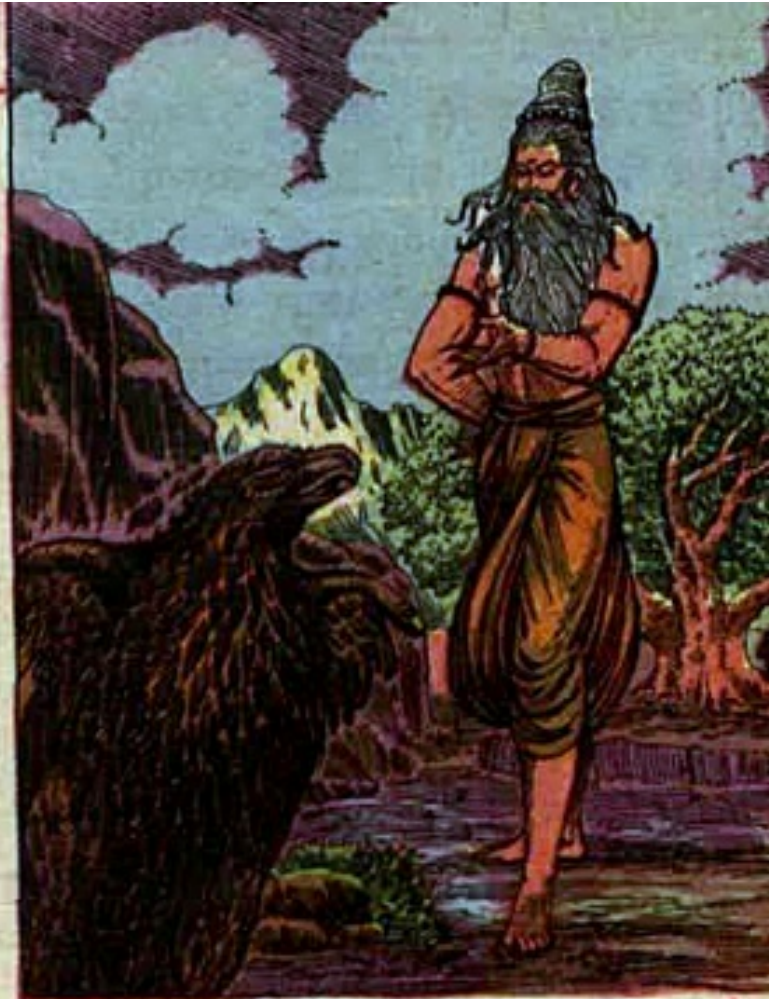
"मैंने उस महर्षि को, जो मेरे साथ बीती

थी, कह सुनायी। कैलास पर्वत पर हमने, यानी मेरे छोटे भाई जटायु और मैंने, शपथ ली थी कि हम सूर्यास्त तक सूर्य के पीछे-पीछे उड़ते जायेंगे। हम काफी ऊंचाई तक उड़े थे। धरती पर के नगर हमें गाड़ियों के पहिये समान दिखाई पड़ते थे। रास्ते में हमें वेदों की गूंज भी सुनाई दी। लाल साड़ियां पहने गीत गाती स्त्रियां दीख पड़ीं। हम और-और ऊंचे उड़ते गये। हमें जंगल छोटे-छोटे मैदान जैसे, पर्वत छोटी-छोटी चट्टानों जैसी और विशाल नदियां धागों के समान दीख पड़ीं। हम तब तक काफी थक चुके थे। हम हांफ रहे थे। अब हमें डर भी लगने लगा। डर के मारे हमें मतिभ्रम होने लगा। हमें जैसे मूर्च्छा आ रही थी। हम दिशा-ज्ञान खो रहे थे। आंखें ठीक से देख नहीं पा रही थीं। पृथ्वी और आकाश हमारे लिए एक हो गये थे।

''इतने में जटायु वाकई मूर्च्छित होता दिखा। वह नीचे गिरने लगा। मैं भी नीचे आने लगा। मैंने अपने पंखों से जटायु को छाया दी। मेरे पंखों की छाया पाकर जटायु तो संभल गया, पर मेरे पंख जल गये। जटायु शायद आबादी वाले क्षेत्र में गिरा। यह सब मैंने निशाकर महर्षि को बताया, और उन्हें यह भी बताया कि अब मैं जीना नहीं चाहता, इसलिए पहाड़ से कूदकर अपनी जान दे दूंगा।

''तब उस महर्षि ने मुझे आने वाले कल की बातें बतायीं। उन्होंने कहा कि तुम लोग सीता को ढूंढ़ते हुए आओगे और मैं तुम लोगों की मदद करूंगा और तब मेरे पंख वापस आ जायेंगे। इसलिए मैं तुम लोगों की प्रतीक्षा कर रहा था।''

अभी संपाती ने अपनी बात मुश्किल से ही पूरी की थी कि उसके पंख उग आये। वानर हैरान हुए यह चमत्कार देख रहे थे। अपने पंखों को पाकर संपाती बहुत खुश हुआ। ''मेरे पंख लौट आये हैं। मुझे मेरी पुरानी शक्ति भी मिल गयी है। इसलिए अब मुझे यकीन हो गया है कि तुम्हारा प्रयास भी ज़रूर सफल होगा। मैं अब अपने पंखों की शक्ति आज़माना चाहता हूं,'' और यह कहता हुआ वह पक्षी आकाश में उड़ गया।

चांदी की दाढ़ें

एक गांव में पूरन और केशो नाम के दो मित्र रहते थे। दोनों ही बचपन से अनाथ थे। उन्होंने एक बरगद की शरण ली। बरगद में बहुत बड़ा खोल था। वही अब उनका ठौर बन गया।

वे कुछ मेहनत-मज़दूरी करते जिससे दाल-चावल खरीद लेते और अपना पेट भर लेते। अब धीरे-धीरे उन्होंने बरतन भी जुटा लिये थे और छोटा-सा तालाब था। नहाने-धोने का काम वहां चल जाता।

यानी, अब बरगद ही उनका सब कुछ था। लकड़ियां पास के जंगल में मिल ही जाती थीं। उन्हें वे बीन लाते। चूल्हे के नाम पर उन्होंने तीन पत्थर जोड़ लिये थे। इसलिए खाना तैयार करने में कोई दिक्कत नहीं आती थी। बस, शाम हुई, अपने ठौर पर लौटे, दाल-चावल साफ किये और उन्हें चूल्हें पर चढ़ा दिया। फिर तालाब पर नहाये-धोये, खाना खाया और कोई चादर बिछाकर वहीं सो गये। बस, यही उनकी दिनचर्या थी।

फिर उनके मन में कुछ आकांक्षाएं भी जगीं। वे बरगद के पास ही अपनी झोंपड़ी खड़ी कर लेना चाहते थे। झोंपड़ी बन जाये तो वे शादी कर लें। शादी हो जावेगी तो फिर जीवन सुखी हो जायेगा। इसलिए वे दोनों अब कुछ-कुछ पैसा भी बचाने लगे थे।

एक दिन दोनों दोस्त जब अपने काम से लौटे और खाना बनाने की तैयारी करने लगे तो बरगद के भीतर से दो लंबे हाथ बाहर आये और उनके काम में मदद करने लगे।

पूरन और केशो एकदम चौंके। डर के मारे उनकी घिग्घी बंध गयी। तब खोल में से उन हाथों के साथ एक चेहरा भी बाहर आया और उनसे बड़ी विनम्रता से बोला, "मुझे क्षमा करना। मैं बिना तुम्हारी आज्ञा के

अमिता यादव

तुम्हारे खोल में चला आया। मुझे यहीं रहने दो। मैं हर तरह से तुम्हारे काम में हाथ बंटाऊंगा।''

उस विलक्षण प्राणी की बात सुनकर अब पूरन और केशो की जान में जान आयी। उन्होंने उसकी तरफ़ ग़ौर से देखा। उसका चेहरा सूप के समान चपटा था।

खैर, अब तक उन मित्रों की कुछ हिम्मत भी बंध गयी थी। वे अकड़कर बोले, ''हमारी गैर-हाज़िरी में तुम्हारी इतनी ज़ुर्रत कैसे हुई यहां डेरा डालने की! तुम यहां से गोल हो जाओ, नहीं तो हम अभी तुम्हें मज़ा चखाये देते हैं!''

उन दोनों मित्रों की बात सुनकर वह प्राणी घबरा गया। उसका चेहरा भी अब पिचककर दमड़ी के समान हो गया। वह उनके पांव पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाते हुए कहने लगा, ''मुझे नकारो नहीं। मेरे सिर छिपाने के लिए अब कोई जगह नहीं। मेरे साथी प्रेतों ने मुझे खदेड़ दिया है। मैं उनके बीच रहने के काबिल नहीं रहा। मैं छिपकर तुम लोगों को परखता रहा। मुझे विश्वास हो गया है कि तुम बड़े ही दयालु हो। इसलिए मुझे भी अपने यहां बने रहने दो। मुझे जो काम बताओगे, करूंगा। तुम्हारा खाना भी पका दिया करूंगा। कपड़े भी धो दिया करूंगा। बस, मुझे मुट्ठी भर खाना दे दिया करना! मुझे और कुछ नहीं चाहिए।''

अब दोनों मित्रों की जिज्ञासा जग गयी थी। वे जानना चाहते थे कि वह दूसरे प्रेतों के बीच कैसे रहने के काबिल नहीं रहा, और क्यों उन्होंने उसे खदेड़ दिया! इसलिस केशो की बात बीच में ही काटकर पूरन ने उससे पूछा, ''तुमने बताया नहीं कि तुम्हारे साथियों ने क्यों तुम्हें खदेड़ा?''

इस पर प्रेत ने अपना हांड़े-सा मुंह खोल दिया और दु:खी स्वर में बोला, ''देख रहे हो न! मेरी दोनों तरफ की दाढ़ें उखड़ गयी हैं! मेरा मुंह अब पोपला हो रहा है। पोपले मुंह को दूसरे प्रेत अपने बीच रहने देना नहीं चाहते। इसे वे अपना अपमान समझते हैं। इसीलिए उन्होंने मुझे खदेड़ दिया। अब तुम भी अगर मुझे यहां नहीं रहने दोगे, तो मैं कहां जाऊंगा! इसलिए मुझे अपना तीसरा मित्र मानकर अपने बीच ही रहने दो!''

"तुमने यह तो बताया ही नहीं कि तुम्हारी दाढ़ें उखड़ीं कैसे और तुम्हारा मुंह पोपला कैसे हो गया?" पूरन ने पूछा ।

प्रेत पूरन के प्रश्न पर परेशान हो गया । फिर बोला, "वह एक लंबी कहानी है!...."पूरन कुछ और कहने जा रहा था तो केशो ने टोक दिया, "लंबी कहानी है तो अपने पास ही रहने दो । हमारे पास इतना वक्त नहीं कि हम तुम्हारी यह कहानी सुनें! हम तो मज़दूर लोग हैं । किसी तरह अपना पेट पाल रहे हैं ।" फिर वह पूरन से बोला, "अरे पूरन! छोड़ो इस चक्कर को! हमें इसकी दाढ़ों से क्या लेना-देना! यह जाने और इसकी दाढ़े जानें!"

केशो को इस तरह फटकार देते सुन प्रेत रुआं-सा हो गया और बोला, "यह सब दाढ़ों के कारण ही है कि मैं अब अपना भोजन जुटा नहीं पा रहा!" फिर उसने अपने को धिक्कारते हुए कहा, "धत्! यह भी कोई जीना है! इससे तो खत्म हो जाना ही बेहतर होता!" फिर वह बरगद के पेड़ से अपना माथा फोड़ने लगा ।

इस पर केशो को प्रेत पर दया आ गयी । उसने उसे दिलासा देते हुए कहा, "ठीक है । फ़िक्र मत करो । तुम यहीं हमारे पास रह सकते हो । पर एक बात का ध्यान रहे । तुम्हें ढंग से रहना होगा । कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिए!"

प्रेत इस पर गद्गद् हो आया और उसने झुककर उन दोनों के पांव छुए ।

पर पूरन के मन की जिज्ञासा गयी नह[illegible] थी । उसने प्रेत से फिर जानना चाहा वि[illegible] उसकी दाढ़ें उखड़ने का कारण क्या है ।

तब प्रेत ने लंबी सांस छोड़ी और बोला "वक्त आने पर ज़रूर बताऊंगा । अ[illegible] काफी देर हो गयी है । मुझे तुरंत रसोई [illegible] काम में जुट जाना चाहिए ।"

और यह कहकर प्रेत खाना बनाने में ल[illegible] गया और कुछ ही देर में उसने खाना तैयार भ[illegible] कर लिया । फिर पूरन, केशो और वह प्रेत तीनों एक साथ बैठकर खाना खाने लगे । प्रेत के हाथ का बना खाना वाकई स्वादिष्ट था [illegible] पूरन और केशो, दोनों को बहुत तृप्ति हुई [illegible]

अगले दिन प्रेत, पूरन और केशो से पहल[illegible] ही उठ गया और उसने पेड़ के आस-पास प[illegible]

खे पत्ते, टहनियां और पक कर गिरे फल टोर-बुहार कर उस जगह को साफ-सुथरा ना दिया । फिर उसने तालाब पर उनके गंदे पड़े धोये और उन्हें चमका दिया । कपड़े ो चुकने और उन्हें फैलाने के बाद वह रसोई यार करने लगा ।

पूरन और केशो प्रेत के काम करने के ढंग बहुत खुश थे । वे अब पहले से ज़्यादा हनत करने लगे ताकि वे प्रेत के लिए भी मा सकें और तीनों का पेट आसानी से भर कें । कहने को प्रेत मुट्ठी-भर खाता था, किन एक बार में ही सब कुछ वह खत्म कर ता था ।

एक शाम मज़दूरी देते समय सेठ ने हंसते ए पूछा, "क्यों भाई, यह तो बताओ, क्या तुम लोगों ने हमें बताये बिना ही शादी रचा ली?"

"क्यों, सेठ जी?" पूरन और केशो ने पलट कर प्रश्न किया ।

"वह इसलिए कि तुम लोग अब ज़्यादा से ज़्यादा मेहनत करके ज़्यादा से ज़्यादा कमाने के चक्कर में रहते हो!" और सेठ फिर हंसने लगा । लेकिन इस बार सेठ हंसा तो उसका सोने का दांत भी चमक उठा ।

तब पूरन के मन में एक विचार कौंधा । अपने ठिकाने की ओर लौटते हुए उसने केशो से कहा, "केशो, आदमी के दांत गिर जाते हैं तो वह सोने के दांत लगवा लेता है! अपने प्रेत की सोने की दाढ़ें लगवा दें तो कैसा रहे?"

"सोने की दाढ़ें!" केशो ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "सोने की दाढ़ें तो बहुत महंगी पड़ेंगी । चलो, सोने की नहीं, चांदी की लगवाये देते हैं! हमारे पास जो रकम जमा है, शायद वह इसके लिए काफी हो । फिर, सोने की दाढ़ों और चांदी की दाढ़ों में फर्क क्या है! दाढ़ तो दाढ़ ही है । एक बार लग गयीं तो प्रेत फिर पहले जैसा हो जायेगा, और हमारा हर काम तुरत-फुरत कर दिया करेगा । दूसरे, हमारा उस पर एहसान भी रहेगा । चलो, उसे बताये देते हैं! वह बहुत खुश होगा ।"

अपने ठिकाने पर पहुंचकर पूरन और केशो ने प्रेत को अपने मन की योजना कह सुनायी । प्रेत आनंद-विभोर हो उनकी तरफ देखता रहा । दूसरे दिन वे उसके लिए चांदी की दाढ़ें बनवाने शहर की ओर बढ़ चले ।

शहर की ओर बढ़ रहे थे तो उनके मन में एक संदेह उठा—वे अपनी दाढ़ों का नाप तो सुनार को दे सकते हैं, पर प्रेत की दाढ़ों का नाप कैसे दें? वे जिस भी सुनार से इस बारे में बात करते, वह उनकी तरफ ऐसे देखता जैसे वे प्रेत ही हों ।

आखिर वे हेमांश नाम के एक सुनार के पास पहुंचे, और उसे उन्होंने बात पलट कर बतायी । यानी उसे उन्होंने यह बताया कि वे एक नाटक कंपनी से आ रहे हैं और वहां उन्हें प्रेत की भूमिका करनी है, और इसके लिए उन्हें प्रेत के नाप की चांदी की दाढ़ें चाहिए ।

हेमांश ने उनके लिए प्रेत के नाप की चांदी की दाढ़ें बनाना स्वीकार कर लिया और उन्हें एक हफ्ते के बाद आने को कहा । पेशगी में उसने उनसे कुछ रकम भी ले ली ।

एक हफ्ता बीतने पर जब वे हेमांश की दुकान पर पहुंचे तो उन्हें वहां सात-आठ वर्ष का बालक दिखाई दिया । वह बालक उन चांदी की दाढ़ों को बार-बार पलट कर देख रहा था, और हेमांश से कुछ उलटे-सीधे प्रश्न भी पूछ रहा था ।

पूरन और केशो को देखकर हेमांश खुश हुआ और उनकी आव-भगत करते हुए बोला, "आइए, आप ही इसे जवाब दें!"

पिता द्वारा परिचय देने पर कंचन तुरंत उन दोनों मित्रों की ओर मुड़ा और बोला, "तो आप हैं ये दाढ़ें बनवाने वाले! सुना है आप किसी नाटक में प्रेत की भूमिका कर रहे हैं! ज़रा मुझे भी तो बताइए कि वह भूमिका क्या

है! किसी प्रेत को चांदी की दाढ़ें लगवाने क
क्या ज़रूरत पड़ गयी?"

पूरन और केशो थोड़े असमंजस में प
गये । उन दोनों ने एक-दूसरे की तरफ़ गौ
से देखा । फिर केशो ही बोला, "यह कहान
यों है—एक मंत्र जानने वाले के पास बोतल
एक प्रेत बंद था । वह प्रेत बड़ा ही उद्दं
था । मंत्रेला बराबर उसकी उद्दंडत
बर्दाश्त करता रहा, लेकिन एक दिन उस
तंग आकर उसकी दाढ़ें उखाड़ लीं और उ
अपने यहां से भगा दिया । बिना दाढ़ों के प्रे
बहुत ही परेशान हो गया । वह इध-उध
भटकता रहा और आखिर एक ग़रीब के यह
जा पहुँचा । ग़रीब के यहां पहुंचकर उसने
अपनी सारी दासता कह सुनायी । ग़रीब क

उस पर दया आयी और उसने उसे अपने यहां रख लिया । फिर कुछ दिनों बाद उसने बची रकम से उसके लिए चांदी की दाढ़ें बनवायीं और उसे पहनवा दीं । प्रेत उसके प्रति बहुत ही कृतज्ञ था और दासों की तरह उसकी सेवा करता था!"

केशो के मुंह से यह कहानी सुनकर कंचन ठठाकर हंसा । दोनों मित्र भौंचक उसे देखते रह गये ।

फिर वह एकाएक बोला, "आपकी कहानी में सच्चई की कमी है! प्रेत अगर उद्दंड था तो वह दाढ़ें लगने पर कभी किसी की मदद नहीं करेगा । वह सीधा वहां से चलता बनेगा और गायब हो जायेगा!"

पूरन और केशो बालक का तर्क सुनकर हैरत में पड़ गये । उनके मन में खटखट हुई । बहरहाल वे दाढ़ों के साथ वापस अपने ठिकाने पर आये । रास्ते में केशो ने इतना ज़रूर कहा, "दाढ़ें पाकर अगर हमारे प्रेत ने हमें धोखा दिया तो!"

इस पर पूरन बोला, "नहीं, नहीं, हमारा प्रेत ऐसा नहीं है । फिर भी हम उससे बात खोल लेते हैं!"

प्रेत तो पहले से ही उनके इंतज़ार में था । इसलिए बिना बात को घुमाये उन्होंने साफ-साफ अपने मन का संदेह उसे बता दिया । प्रेत कुछ देर तक तो परेशान-सा दिखा, फिर आंसू बहाता हुआ बोला, "अब मुझे बताना ही पड़ेगा कि मैंने अपनी दाढ़ें कैसे गंवा दीं!" और वह अपनी कहानी सुनाने लगा—

"यहां आने से पहले मैं एक बोतल में बंद था । मुझे बोतल में बंद करने वाले का नाम प्रेतनारायण भूतशर्मा था! वह भूतवैद्य था । उसका एक मित्र था- पिशाचप्रिय भूतनाथ । उसने भी एक प्रेत को अपना बंदी बना रखा था । दोनों मित्र अपने-अपने प्रेत की श्रेष्ठता का बखान करते रहते, और हम दोनों के बीच अक्सर मुकाबला करवा देते । ताड़ के पेड़ों को उखाड़कर, और उन्हें कंधे पर डालकर दूर-दूर तक दौड़ लगाना, कभी नदी में कूदकर मगरमच्छों से लड़ना और उन्हें मारकर किनारे लाना—ये सब आम बातें थीं ।

"एक दिन उन दोनों दुष्टों को एक और खुराफात सूझी । उन्होंने हम से कहा कि हम अपने दांतों से मोटे-मोटे रस्से बांध लें और

उन रस्सों से बड़ी-बड़ी शिलाओं को घसीटते हुए उन्हें ऊपर, दूर पहाड़ी पर ले जायें । बाकी सब मुकाबलों में तो मैं जीतता रहा, पर इस मुकाबले में हार गया, क्योंकि शिलाओं को खींचते वक्त मेरी दोनों तरफ की एक-एक दाढ़ उखड़कर बाहर आ गयी। इस पर प्रेतनारायण ने मुझे सहानुभूति तो क्या करनी थी, उलटा मुझे लाठी से पीटने लगा और पीटते-पीटते उसने मुझे अपने यहाँ से भगा दिया । तब मैं आप दोनों की शरण में आया!"

प्रेत की कहानी काफी रोचक थी । पूरन और केशो को अब विश्वास हो गया था कि जैसे ही प्रेत की दाढ़ें लग जायेंगी, वैसे ही वह अपनी पूरी शक्ति पा जायेगा और उनके बहुत काम आयेगा । हो सकता है वह उनके लिए कहीं से छिपा हुआ खजाना ही खोज लाये और उन्हें मालामाल कर दे, और उनकी सारी गरीबी चुटकी बजाते ही मिट जाये ।

अब पूरन और केशो ने बिना विलंब किये प्रेत के चांदी की दाढ़ें लगा दीं । फिर वे उसे पानी के तालाब के पास ले गये और उससे बोले कि वह पानी में झांककर अपनी तसल्ली कर ले

प्रेत ने अपना मुंह खोलकर पानी में अप दोनों दाढ़ें ग़ौर से देखीं । फिर वह उत्साह बोला, "वाह! क्या बात है! ये तो पहली दाढ़ों भी बढ़िया हैं!"

पूरन औरा केशो अब कुछ और प्रश्न कर चाहते थे कि प्रेत ने आकाश की तरफ देखा अ एक ही उड़ान में यह जा, वह जा । पूरन अ केशो हक्के-बक्के से देखते ही रह गये ।

आखिर, वे अपने ठिकाने की ओर लौट उनके सिर झुके हुए थे । फिर पूरन बोला, "य केशो, मान गये सुनार के उस बेटे को! उम्र चाहे वह हम से कहीं छोटा था, पर अक्ल में ह से कहीं बढ़कर था । उसने प्रेत को ठ पहचाना । दो-टूक बात बोला था । हमने प्रेत की बातों में आकर अपनी तमाम जमा-पु ही गंवा दी । बालक की बात मान गये होते यह नौबत न आती!"

केशो की समझ में नहीं आ रहा था कि पू की बात का क्या जवाब दे । उसने चुपच सहमति में अपना सिर हिला दिया ।
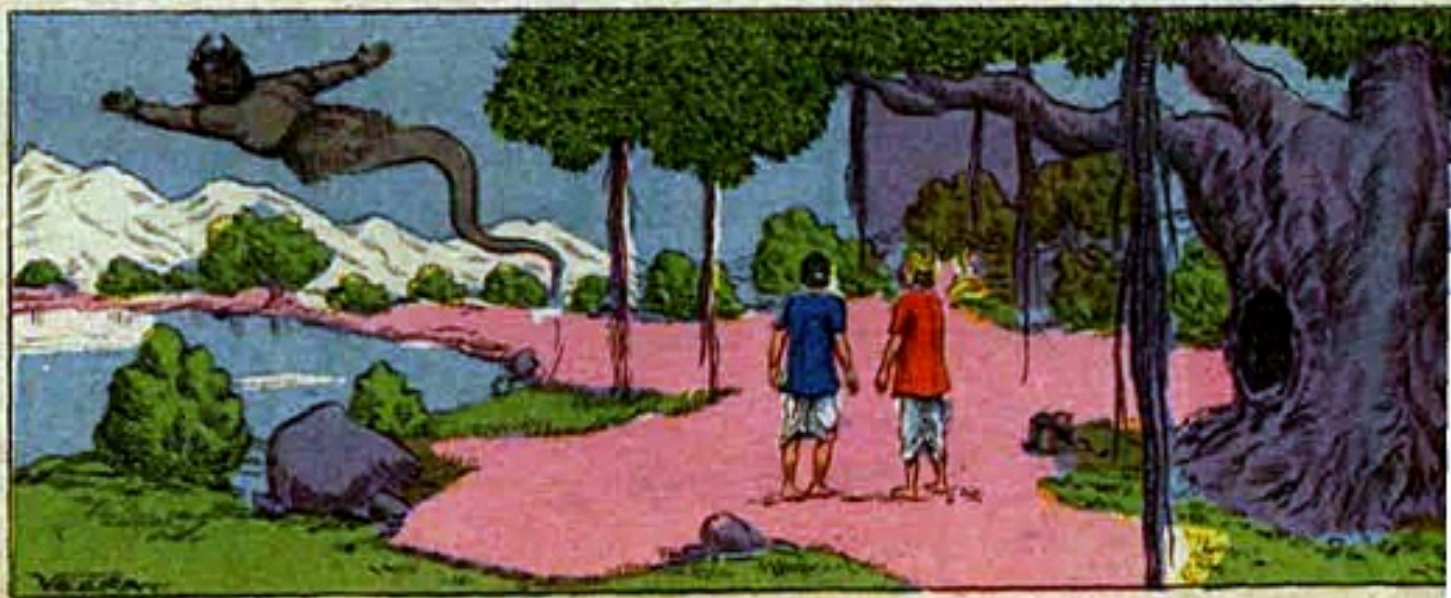
न्याय कैसे मिला?

पु रानी बात है । बग़दाद में अली नामका
एक हज्जाम रहता था । वह अपने पेशे
बेजोड़ था, इसलिए खास-खास लोगों की
हजामत बनाता था । उसके ग्राहकों में
दाद के अमीर-उमरा और शाही
हकार शामिल थे ।

एक दिन अली के घर में जलाने की लकड़ी
थी । इसलिए वह किसी लकड़हारे के
ज़ार में अपने घर के सामने बैठा रहा ।
ई बूढ़ा लकड़हारा नज़र आया तो अली ने
पुकारा और बोला, "बताओ, गधे पर
इस तमाम लकड़ी के क्या तुम्हें पांच
र मंज़ूर हैं?"

बूढ़े लकड़हारे ने 'हां' कह दी और गधे पर
ारी लकड़ियां उतार दीं । फिर उसने तय
ायी रक़म मांगी ।

पर मैंने तो तुम से गधे पर लदी पूरी
ड़ी के दाम तय किये थे!" हज्जाम ने थोड़ी
नाराज़गी दिखाते हुए कहा, "वह क्या लकड़ी
नहीं है? वह गधे की जीन- वह भी दे दो!"

"यह कैसे हो सकता है? यह तो सरासर
राहज़नी है!" बूढ़े लकड़हारे ने कहा ।

हज्जाम के स्वर में नाराज़गी तो पहले ही
थी, अब वह एकदम तैश में आ गया और तैश
में उसने लकड़हारे के थप्पड़ दे मारा, गधे पर
से जीन खींचकर उसे वहां से भगा दिया ।

अली हज्जाम से थापड़ खाकर लकड़हारा
बहुत दुःखी हुआ । रोते-सिसकते हुए वह
काज़ी के पास गया । काज़ी ने लकड़हारे की
बात सुनी, पर वह तो पहले ही हज्जाम के पक्ष
में था, क्योंकि वह उसी का हज्जाम था ।

जब छोटे काज़ी ने उसकी बात पर ध्यान
नहीं दिया तो वह बड़े काज़ी के पास पहुंचा ।
पर बड़े काज़ी का भी वही हाल था । वह
भला अपने हज्जाम के ख़िलाफ फैसला कैसा
सुनाता!

अरबी लोककथा

बूढ़ा लकड़हारा निराश हो गया । रास्ते में उसे उसी की तरह का एक बूढ़ा मिला । उसने लकड़हारे की उदासी का कारण जानना चाहा । इस पर बूढ़े लकड़हारे ने उसे अपनी गाथा कह सुनायी ।

"अरे, इत्ती-सी बात के लिए इतने उदास हो? जाओ, सीधे ख़लीफा के पास जाओ । तुम्हें इंसाफ ज़रूर मिलेगा!" बूढ़े राहगीर ने उसे सुझाव दिया ।

लकड़हारा ख़लीफा के पास पहुंचा । ख़लीफा एक सरल व्यक्ति था । इसलिए उससे मिलने में उसे कोई दिक्कत नहीं हुई । लकड़हारे ने झुककर उसे सलाम किया और शुरू से आखिर तक सारी बात कह सुनायी ।

ख़लीफा थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा । फिर बोला, "फैसला तो अली के हक़ में ही जाता है! बहरहाल, इंसाफ तो तुम्हें मिल ही चाहिए । तुम ज़रा मेरे नज़दीक आओ लकड़हारा उसके नज़दीक हुआ तो ख़लीफ उसके कान में कुछ फुसफुसाया, जि लकड़हारा मुस्करा उठा और उसे सल करते हुए वहां से चला आया ।

ऐसे ही कुछ दिन बीत गये । एक अचानक लकड़हारा अली के यहां गया उस से बोला, "मेरी और मेरे दोस्त हजामत बनाने का तुम क्या लोगे?"

"दो दिनार!" अली ने चटाक से उ दिया, "पूरे दाम मिल जाने पर तुम्हारी तुम्हारे दोस्त की तसल्ली-बख़्श हजा बनाऊंगा!"

"ठीक है । ये लो दो दिनार । पहले हजामत बनाओ," बूढ़े लकड़हारे ने

दनार देते हुए कहा ।

अली जब बूढ़े लकड़हारे की हजामत बना चुका तो उसने उससे पूछा, "तुम्हारा दोस्त कहां है?"

"बाहर खड़ा है । अभी उसे लिवाये लाता हूं," कहकर लकड़हारा अपने गधे की रस्सी थामे भीतर चला आया ।

"यह क्या? यह तो गधा है!" अली काफी हैरान था ।

"यही मेरा दोस्त है!" लकड़हारे ने उत्तर दिया, "तुमने रकम मुझ से पहले ही वसूल ली है । अब तुम बिना देर किये इस की हजामत बनाना शुरू कर दो!"

"क्या कहा, गधे की हजामत बनाऊं? यहां से फौरन चलते बनो, नहीं तो तुम्हारी खाल उधेड़ दूंगा!" अली आग बबूला हो रहा था ।

लकड़हारे ने ख़लीफा से इस की फरियाद की । हज्जाम अली को वैसे ही उसके उस्तरे के साथ पेश किया गया ।

"इसके दोस्त की हजामत बनाने से तुम इनकार क्यों रहे हो, जब कि तुम उसके लिए रकम भी वसूल कर चुके हो?" ख़लीफ ने अपनी नाराज़गी दिखाते हुए कहा ।

अली ने झुककर ख़लीफा को सलाम किया और बोला, "हुज़ूर । आपने जो फ़रमाया, वह सही है । लेकिन आदमी का दोस्त गधा हो और उस गधे की हजामत बनायी जाये, ऐसा तो कभी सुना नहीं!"

"तुम ठीक ही कहते हो । इसी तरह जलाने की लकड़ी के साथ गधे की जीन को मांगना भी हम ने पहले कभी नहीं सुना था । खैर, तुम अब देर मत करो । उसी की फटाफट हजामत बना दो ।" ख़लीफा ने अपने उसी अंदाज़ में कहा ।

अली के लिए अब बचने का कोई रास्ता न था । उसे अपने किये का फल मिल चुका था । उसने अपना उस्तरा संभाला और लगा उसे गधे पर फिराने । गधे पर उस्तरा फिराते देखकर सभी दरबारी उस पर ठठाकर हंस पड़े । बेचारा अली अपना-सा मुंह लेकर रह गया । इसके बाद अली के पास कोई हजामत बनवाने नहीं गया ।

बहुत ही बड़ा शार्क

१९७८ में अजोर्स में एक शार्क पकड़ा गया था। सफेद रंग का, विशालकायी, यह शार्क अब तक प्राप्त शार्कों में काफी बड़ा है। इसकी लंबाई २९ फुट ६ इंच है यानी ९ मीटर, और वज़न ४,५३६ किलोग्राम, यानी १०,००० पाउंड।

वह तूफान जिसने धरती की रफ्तार कम कर दी

जनवरी १९८३ में आया प्रशांत महासागर का तूफान इतना शक्तिशाली था कि कुछ दिनों तक उससे धरती की रफ्तार १/५ मिलिसैकंड प्रति दिन कम रही। इसके विपरीत पृथ्वी के वायुमंडल का दबाव पहले वायुमंडलीय दबाव की तुलना में ८.५ प्रतिशत अधिक रहा।

लंबे-लंबे हाथीदांत
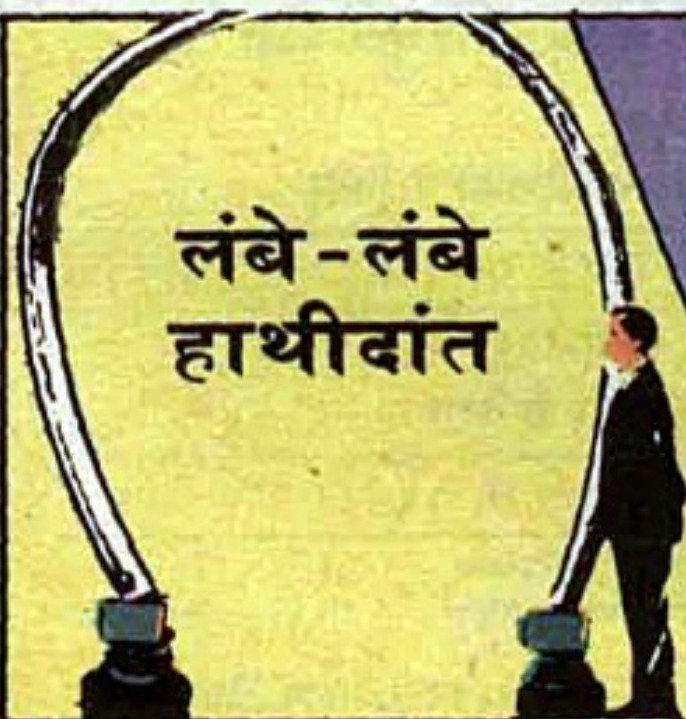
न्यूयार्क जियालोजिकलि सोसाइटी द्वारा हाथीदांत का एक जोड़ा प्रदर्शित किया गया है। दायें दांत की लंबाई ११ फुट ५ १/२ इंच (३.४९ मीटर) है और दायें दांत की लंबाई ११ फुट (३.३५ मीटर)।

कहा जाता है कि अब तक पंजीकृत दांतों में यह बहुत ही लंबा है।

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. ८१/-   वायु सेवा से रु. १५६/-

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. ८७/-   वायु सेवा से रु. १५६/-

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. Place of Publication	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
2. Periodicity of Publication	MONTHLY Ist of each calender month
3. Printer's Name	B.V. REDDI
Nationality	INDIAN
Address	Prasad Process Private Limited 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
4. Publisher's Name	B.VISWANATHA REDDI
Nationality	INDIAN
Address	Chandamama Publications 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
5. Editor's Name	B.NAGI REDDI
Nationality	INDIAN
Address	'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
6. Name and Address of individuals who own the paper	CHANDAMAMA PUBLICATIONS PARTNERS: 1. Sri B. VENKATRAMA REDDY 2. Sri B.V. NARESH REDDY 3. Sri B.V. SANJAY REDDY 4. Sri B.V. SHARATH REDDY 5. Smt. B. PADMAVATHI 6. Sri B.N. RAJESH REDDY 7. Smt. B. VASUNDHARA 8. Kum. B.L. ARCHANA 9. Kum. B.L. ARADHANA(Minor) (Minor admitted to the benefits of Partnership) 'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026

I, B Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

1st March 1991

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मई १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

M. Natarajan

Anant Desai

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० मार्च '९१ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जनवरी १९९१ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो: सिमटें सांझ थके-हारे पर।

द्वितीय फोटो: उमगे प्रात, नव-जीवन, नव-स्वर।

प्रेषक: बिट्टू, मास्टर होटल, बाराटूटी, दिल्ली-११० ००६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Ta dum,
They
is here
Oops!
Kiddy grammar
sure is catchy—Ya,
they are here.
Bow Wow 'n' Floppy the doggies (wuff! wuff!), Jumbo the elephant, Wobbit the rabbit, Teddy 'n' Sporty your bear buddies, the mouse of your house —Squeeks, not to mention Flipper the dolphin 'n' Bunny with the Twins. They are all part of the CUDDLES family. And hang on—there's more to come.
What stuffing to use,
what shape to give,
which colour to use......
We've spent long
months in designing and
crafting the toys which can
take on the toughest torture
The one thing
didn't do wh
making our to
was fool arou
We left th
entirely
your kid to
Come, check us o
CHANDAMAMA TOYTRONI